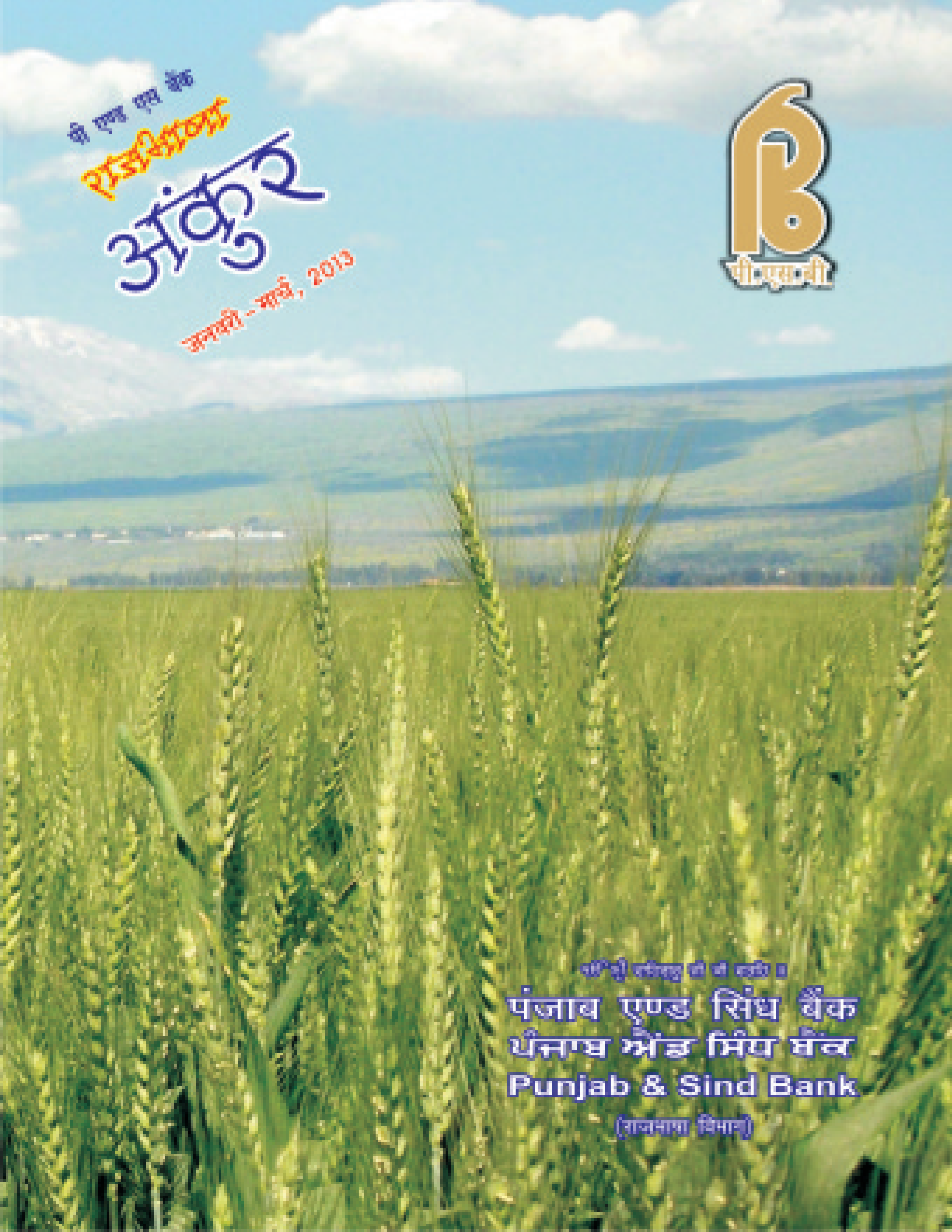

पी एण्ड एस बैंक

राजभाषा

अंकुर

जनवरी - मार्च, 2013

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

Punjab & Sind Bank

(राजभाषा विभाग)

बैंक का विज़न और मिशन

बैंक का कार्पोरेट विज़न

हमारी परिकल्पना है कि हम मानवीय, वित्तीय तथा प्रौद्योगिकी संसाधनों में आदर्शतम तालमेल स्थापित करके एक सुदृढ़ एवं सक्रिय बैंक के रूप में उजागर हों।

बैंक का मिशन

- प्रभावशाली जोखिम प्रबंधन तथा आंतरिक नियंत्रण प्रणालियों का कार्यान्वयन।
- उच्च-स्तरीय प्रौद्योगिकी मानदंड अपनाना।
- ग्राहक-सेवा में उत्कृष्टता हासिल करने हेतु प्रयत्न करना।
- बैंकिंग कारोबार के प्रबंधन में उत्तरदायित्व का निर्धारण करना एवं उच्च-कोटि की पारदर्शिता लाना।
- वित्तीय एवं गैर-वित्तीय जोखिम के प्रभावी प्रबंधन हेतु व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना।
- प्रशासनिक दिशा-निर्देशों का उचित रूप से अनुपालन करते हुए बैंक का लाभ एवं लाभप्रदता बढ़ाना।
- योजनाबद्ध ढंग से निधियों की औसत लागत को घटाते हुये पूंजी पर प्रतिस्पर्धात्मक समंजित जोखिम नियंत्रण द्वारा प्रतिफल को बढ़ाना एवं प्रचालन लागत में कमी कर अग्रिम तथा निवेशों से आय को बढ़ाना।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

Visit us at : www.psbindia.com

पी एण्ड एस बैंक-ग्राहक सेवा ही जीवन-ध्येय है।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस,
नई दिल्ली-110 008

जनवरी-मार्च 2013

विषय-सूची

मुख्य संरक्षक
श्री डी. पी. सिंह, आईएएस
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री पी. के. आनन्द
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक
श्री जी. एस. ढल्ला
महाप्रबंधक

संपादक व प्रकाशक
डॉ. परमजीत सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक एवं प्रभारी,
राजभाषा विभाग

संपादक मंडल
श्री कंवर आलोक
प्रबंधक
श्री हिमांशु राय
राजभाषा अधिकारी
श्रीमती शिल्पी सिन्हा
राजभाषा अधिकारी
श्री सोनी कुमार
राजभाषा अधिकारी

पंजीकरण सं. : एफ 2(25) प्रैस. 91

राजभाषा अंकुर में प्रकाशित सामग्री में दिये गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस
[illegible]

आप की कलम से	2
संपादकीय	3
सूचीबद्ध कंपनियों में सामाजिक जिम्मेदारी	4
जीवन बीमा क्यों?	7
भारत की उपेक्षित विरासतें	8
कर्ज-मुक्ति	12
बैंकिंग कल, आज और कल	14
नई आशाएं	17
हिंदी-पंजाबी कार्यशालाएं	19
13वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन	20
चंडीगढ़ में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन	21
प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण योजना हेतु बचत जमा खाता शिविर	22
गतिविधियां	24
शैक्षिक-ऋण जागरूकता कैंप	25
राजभाषा-समाचार	26
ग्रामीण स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थान की गतिविधियां	27
कृषि-प्रश्नावली	28
नारी	29
आई.बी.एस. टूर्नामेंट-समाचार	32
हिंदी सिनेमा और मुस्लिम समाज	34
पतित-पावनी यमुना	36
सकारात्मक सोच	38
काव्य-मंजूषा	40
सेवा-निवृत्तियां	42
हमारे चित्रकार	44

आपकी कलम से

पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है तथा समाहित सामग्री अत्यंत उपयोगी व सामयिक है। संपादक महोदय ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन के माध्यम से बड़ा ही प्रेरक संदेश दिया है। इतने सुंदर अंक के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल के सदस्यों को हम बधाई देते हैं।

- श्री के. एम. मिश्र
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

पत्रिका में चित्र प्रदर्शनी समसामयिक है। इससे बैंक की गतिविधियों की जानकारी मिल रही है। पत्रिका के लेख राजभाषा के साथ-साथ बैंक संबंधी प्रक्रिया की जानकारी देने में सक्षम हैं। 'मानक हिंदी वर्तनी एवं इसकी स्वरूप-संरचना'-श्री शैलेश कुमार सिंह, 'कार्यालयीन पत्र-व्यवहार'-श्रीमती इन्द्रपाल कौर, 'ग्राहकों द्वारा बैंकिंग में इंटरनेट का प्रयोग'-श्री ओम प्रकाश, 'भ्रष्टाचार-कारण और निवारण'-श्रीमती नीलम मल्होत्रा के साथ-साथ 'सुभद्रा कुमारी चौहान-एक परिचय'-श्रीमती शिल्पी सिन्हा के लेख सम-सामयिक एंव विचारणीय हैं। पत्रिका का नन्हे चित्रकार कॉलम संग्रहणीय है। पत्रिका की साज-सज्जा सुंदर है। पत्रिका की भाषा में शालीनता एवं बोधगम्यता है। पत्रिका में प्रकाशक मण्डल का दृष्टिकोण झलकता है।

-श्री एस. सी. पाण्डेय
पूर्व सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग

पत्रिका का संपादकीय जानकारी पूर्ण है। हिंदी से संबंधित लेख 'मानक हिंदी वर्तनी एंव इसकी स्वरूप-संरचना' उपयोगी एवं अनोखे तरीके से लिखा एवं संग्रहणीय है। इस प्रकार लेख 'कार्यालयीन पत्र-व्यवहार' भी पठनीय एवं जानकारी से युक्त है। लेख 'ग्राहकों द्वारा बैंकिंग में इंटरनेट का प्रयोग' उन लोगों के लिए काफी उपयोगी लेख है जो इसके बारे में बहुत जानकारी नहीं रखते हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएं अपने आप में अनोखी एवं पठनीय हैं। लेख 'भ्रष्टाचार' आज के समय की सबसे बड़ी समस्या का बेहतर निवारण को प्रदर्शित करता एक उम्दा लेख है।

- डॉ. अमर सिंह सचान
राजभाषा अधिकारी, राष्ट्रीय आवास बैंक

आपने अपनी पत्रिका में मानक हिंदी वर्तनी एवं स्वरूप संरचना, पत्र-व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली बैंकिंग शब्दावली, साहित्यिक लेख, बैंकिंग समाचार एवं अन्य विभिन्न गतिविधियों को बखूबी समाहित किया है। इसकी साज-सज्जा अति सुंदर है इसमें प्रकाशित सामग्री रोचक एवं ज्ञानवर्धक है, जिसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

- डी. पी. तनेजा
प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नैशनल बैंक

पत्रिका का कलेवर अत्यंत ही आकर्षक है। 'मानक हिंदी वर्तनी एवं स्वरूप संरचना' तथा 'कार्यालयीन पत्र-व्यवहार' लेख हिंदी में कार्य करने के लिए मददगार होंगे। 'रहिमन धागा प्रेम का....' अच्छा लगा। 'काव्य-मंजूषा' में प्रकाशित कविताएं गागर में सागर हैं। 'ग्राहकों द्वारा बैंकिंग में इंटरनेट का प्रयोग' लेख में दी गई जानकारी ज्ञानवर्धक है तथा आनलाइन बैंकिंग के प्रयोग में सुरक्षा हेतु बुनियादी उपाय अपनाने में मदद करेगी।

- विजय कुमार यादव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), यूको बैंक

संपादकीय

प्रिय साथियो,

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर के संपादक का दायित्व सौंपे जाने एवं इसके माध्यम से आपसे रू-बरू होने का अवसर पाकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

आपके समक्ष यह अंक नव वर्ष में उदीयमान होगा क्योंकि बैंक का वित्तीय-वर्ष 31 मार्च को समाप्त हो जाता है और हिंदू संवत्सर भी आरम्भ हो चुका है। सृष्टि में नव चेतना का संचार हुआ है, पेड़-पौधों पर नई कोपलें आ गई हैं, आम भी बौरा गए हैं। बैसाखी के अवसर पर नया अनाज आ चुका है, कहने का अर्थ है सभी कुछ नया-नया है। इस नयी वेला में मेरा मन भी प्रफुल्लित हो रहा है कि कुछ नया किया जाए।

हाल ही में प्रधान कार्यालय के कुछ साथियों ने विभिन्न अंतः बैंक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कई पुरस्कार प्राप्त किए, जिससे उनकी तो हौसला अफ़जाही हुई ही है, बैंक को भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक विशेष नाम मिला है। इसी प्रकार कुछ आंचलिक कार्यालयों ने भी अपने-अपने क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त किया है। इस प्रकार के पुरस्कारों एवं गतिविधियों से सृजनात्मक क्षमता का नवीकरण होता रहता है, गतिशीलता बनी रहती है। सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई।

इस सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाने में राजभाषा हिंदी की अति विशेष भूमिका है। आप बखूबी जानते हैं कि हम एक सेवी संस्थान है, जिसका अपना कोई उत्पाद नहीं, कोई निर्माण नहीं। हम अपने नए पुराने ग्राहकों को केवल अपनी सेवाएं बेचते हैं। यह सेवाएं हम भाषा के माध्यम से बेचते हैं, विज्ञापन के माध्यम से बेचते हैं। यदि हमारी भाषा हमारे ग्राहक की भाषा नहीं होगी तो हम अपने उत्पाद की उपयुक्त मार्केटिंग नहीं कर पाएंगे और परिणामस्वरूप हमारे अस्तित्व की पहचान बनने में कठिनाई होगी। आज हमारे पास सभी स्रोत एवं सुविधाएं हैं। परंतु आवश्यकता है इन स्रोतों एव सुविधाओं के उपर्युक्त एवं सही दिशा में प्रयोग किए जाने की। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक होने के नाते हमें राजभाषा हिंदी का दामन थामना ही होगा और यह तभी सम्भव होगा जब हम मानसिक रूप से तैयार होंगे। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारे लिए अनिवार्य ही नहीं अपितु संवैधानिक भी है।

राजभाषा विभाग अगले दो अंक विशेषांकों के रूप में निकाल रहा है। अप्रैल-जून, 2013 अंक 'बैंक के स्थापना दिवस' एवं जुलाई-सितंबर, 2013 अंक 'राजभाषा विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे। मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है कि आप इन विशेषांकों को सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं ऐतिहासिक बनाने में अपना विशेष योगदान देते हुए लेख/छायाचित्र एवं अन्य सामग्री भिजवाएंगे।

आपकी सकारात्मक प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में.....

(जी. एस. ढल्ल)
महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक

सूचीबद्ध कंपनियों में सार्वजनिक हिस्सेदारी

– बी. एम. शर्मा

जब से वित्त-मंत्री ने अपने 2009 के बजट भाषण के दौरान बताया कि 'वृहद गैर-मैनीपुलेबल बाज़ार' को विकसित करने हेतु सूचीबद्ध कंपनियों में सार्वजनिक शेयरधारिता को बढ़ाया जाना चाहिए, तब से वित्त-मंत्रालय, सूचीबद्ध कंपनियों में सार्वजनिक शेयरधारिता को कम से कम 25 प्रतिशत तक बढ़ाने पर विचार कर रहा था। अंत में, वित्त-मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग द्वारा जारी अधिसूचना नं. जीएसआर 469(ई) दिनांक 04.06.2010 के सुरक्षा अनुबंध (विनियम) नियम में संशोधन किया गया कि शेयर बाज़ार में सूचीबद्ध बने रहने के लिए, सूचीबद्ध कंपनियों में कम से कम 25 प्रतिशत सार्वजनिक शेयरधारिता होगी।

संशोधन की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :

1. सूचीबद्ध कंपनियों में सार्वजनिक शेयरधारिता कम से कम 25 प्रतिशत होगी।
2. जिन कंपनियों की सार्वजनिक शेयरधारिता 25 प्रतिशत से कम है उनको वार्षिक रूप में, कम से कम 25 प्रतिशत तक करनी होगी तथा बढ़ोतरी 5 प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए।
3. नई सूचीबद्ध होने वाली कम्पनियों के लिए अगर कंपनी की पोस्ट इश्यू केपीटल प्रस्तावित मूल्य पर 4000 करोड़ से ज़्यादा हो तो, कंपनी 10 प्रतिशत की सार्वजनिक शेयरधारिता की अनुमति देगी और वर्ष में कम से कम 5 प्रतिशत की सार्वजनिक शेयरधारिता की बढ़ोत्तरी का अनुपालन किया जाए।
4. इस संशोधन से पूर्व अथवा पश्चात् जिस भी कंपनी का मसौदा प्रस्ताव दस्तावेज सेबी में लंबित है, वे वर्ष में कम से कम 5 प्रतिशत सार्वजनिक शेयरधारिता को बढ़ाएं (कंपनी की पोस्ट इश्यू कैपीटल के निरपेक्ष प्रस्तावित मूल्य पर परिकलित हो)।
5. अगर किसी वर्ष में कंपनी की सार्वजनिक शेयरधारिता बढ़कर 25 प्रतिशत तक पहुँच जाती है तब उस वर्ष कंपनी सार्वजनिक शेयरधारिता को 5 प्रतिशत से कम भी बढ़ा सकती है।
6. प्रत्येक सूचीबद्ध कंपनी को सार्वजनिक शेयरधारिता 25 प्रतिशत कम से कम रखनी होगी, परंतु किसी भी समय यह 25 प्रतिशत से कम होता है तब उन कंपनियों को उस गिरावट वाली दिनांक से, ज़्यादा से ज़्यादा 12 महीनों में, सार्वजनिक शेयरधारिता को बढ़ाकर 25 प्रतिशत तक पहुँचाना होगा।

सूचीबद्ध कंपनियों के साथ-साथ असूचीबद्ध कंपनियाँ जो प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव लाना चाह रही थीं, पर भी इस संशोधन का सार्थक प्रभाव पड़ा है।

तथापि, कंपनी के सार्वजनिक शेयरधारिता परिकलन में, भारत से बाहर जारी की गई एडीआर तथा जीडीआर के रूप में कैपीटल को नहीं गिना जाएगा, यद्यपि ये जनता द्वारा ही धारित हैं।

तथापि, दिनांक 09.08.2010 को अधिसूचना के अंतर्गत, अगस्त 2010 में, सार्वजनिक क्षेत्र की सूचीबद्ध कंपनियों के संबंध में, ये मानदंड कम हो गए हैं। संशोधित सार्वजनिक शेयरधारिता दिशा-निर्देशों के अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र की सूचीबद्ध कंपनियों को अगस्त 2013 तक 10 प्रतिशत न्यूनतम शेयरधारिता तथा इसकी तुलना में निजी क्षेत्र की कंपनियों को 25 प्रतिशत, जून 2013 तक अनिवार्य रखनी होगी।

यहाँ काफी संख्या में गैर-सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम फर्म साथ ही साथ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम कंपनियाँ हैं, जो न्यूनतम शेयरधारिता मानदंडों को भी पूरा नहीं करतीं। अतः जून 2013 तक गैर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के द्वारा और अगस्त 2013 तक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के द्वारा काफी

अच्छी राशि संगठित करनी पड़ेगी। इन कुछ कंपनियों का डाटा निम्न प्रकार से हैं :

क्रम संख्या	सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के नाम	सरकार की शेयर-धारित का प्रतिशत
1.	हिंद कॉपर	94.01
2.	एमएमटीसी	99.33
3.	नेयवेली लिंगनाईट	93.56
4.	एचएमटी	98.68
5.	नेशनल फर्टीलाईज़र्स	97.64
क्रम संख्या	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के नाम	सरकार की शेयर-धारित का प्रतिशत
1.	यूनाइटेड बैंक	81.55
2.	इंडियन बैंक	80.00
3.	सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया	79.15
4.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	78.95
5.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक	78.16

यह देखा गया है कि बेसल III मानदंडों के कार्यान्वयन में, भारत सरकार कुछ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में पूंजी लगा रही है, जिससे केवल भारत सरकार का हिस्सा ही बढ़ेगा।

इसके अतिरिक्त अन्य कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों में निर्धारित मापदण्डों से ज़्यादा ही शेयरधारिता है।

प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम (एससीआरआर 1957) के अनुसार न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता की आवश्यकता को प्राप्त करने की प्रक्रिया :

1. **नए शेयरों/धारिता के आंशिक विक्रय से पूँजी आधार को बढ़ाना।**

   सभी कंपनियाँ, सार्वजनिक क्षेत्र में, अपनी धारिता के आंशिक विक्रय या नए शेयरों द्वारा पूंजी आधार को बढ़ा सकते हैं।

   न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता प्राप्त करने के लिए, सेबी ने फरवरी, 2012 के सूचीबद्धता समझौते के 40ए खण्ड में संशोधन किया। जिसके अनुसार सूचीबद्ध कंपनियाँ, सेबी आईसीडीआर के अंतर्गत संस्थागत प्लेसमेंट कार्यक्रमों के द्वारा न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, प्रमोटरों द्वारा शेयर बाज़ारों के माध्यम से शेयरों को बेचना अर्थात् द्वितीयक बाज़ार के माध्यम को भी लिया जाएगा।

2. **राईट इश्यू/बोनस इश्यू**

   उपरोक्त के संबंध में, सेबी ने पुनः अगस्त 2012 में सूचीबद्ध समझौते के 40ए खण्ड में संशोधन किया तथा इससे निम्न अतिरिक्त तरीके प्राप्त हुए :

   1. सार्वजनिक शेयरधारिता को राइट इश्यू के साथ प्रमोटर्स समूह के राइट इन्टाइटलमेंट।
   2. शेयरधारकों को जारी किए गए बोनस के साथ प्रमोटर्स समूह का बोनस

   परिस्थिति अनुसार सेबी द्वारा अन्य तरीकों को स्वीकृत किया जा सकता है।

3. **संपरिवर्तनीय डिबेंचर जारी करना**

   एक तरीके द्वारा, पहले से सूचीबद्ध कंपनियों में, संपरिवर्तनीय डिबेंचरों को शेयरों में पूर्ण परिवर्तित किया जा सकता हैं। 25 प्रतिशत से कम सार्वजनिक शेयरधारिता के साथ सूचीबद्ध कंपनियों में, प्रतिभूति संविदा (विनियम) नियमों में संशोधन की पहले से ही अनुमति दी गई थी, जो कि एक निश्चित समय में प्राप्त हो। जो कि दूसरे और/या तीसरे वर्ष में, परिवर्तनीय डिबेंचर को सामान्य शेयरों में बदलने हेतु उनको स्थान देगा।

4. **सूची से निकालना**

   प्रमोटर्स के पास असूचीयन शेयर का एक अन्य विकल्प उपलब्ध है। जैसे कि न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता केवल सूचीबद्ध कंपनियों के साथ ही बाध्यकारी हैं। निर्णय केवल प्रमोटर्स पर ही आधारित है, ऐसा संभव है कि कुछ कंपनियाँ असूचीयन मार्ग की ओर जा सकती है। जो इस मार्ग पर चलता है वह एमएनसी से ज़्यादा लाभप्रद होगा यदि प्रमोटर्स की धारिता 80 प्रतिशत से ज़्यादा है तथा निकट भविष्य में, पूंजी बढ़ाने की कोई नई योजना नहीं है।

यह कंपनी का ही निर्णय होगा कि उसे कौन सा मार्ग अपनाना चाहिए।

निकट भविष्य में, इन सब कंपनियों का सार्वजनिक इश्यू जारी करना आसान नहीं है अगर यह कंपनियाँ बाज़ार में आती हैं तो वे अपेक्षित क्रम में संभाव्य मूल्य को पहचान नहीं सकते। यह भी उल्लेखनीय है कि संशोधन में अनुपालन न होने पर कोई जुर्माने का प्रस्ताव नहीं है तथा इससे बाज़ार विनियामक के सही लक्ष्यों पर कुछ संदेह होता है। इस संशोधन का औचित्य है कि लगातार बिखरी हुई शेयर होल्डिंग संरचना, बाज़ार हेतु लाभकारी होती है तथा साधारण अनुभव के अनुसार, बड़े शेयरधारकों में बदलाव की कम शंका रहती है।

- प्र.का. लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग (शेयर कक्ष)
नई दिल्ली

हमारे नये महाप्रबंधक

श्री राकेश चंद्र नारायण

एक परिचय :

श्री राकेश चंद्र नारायण जी ने मार्च 2013 में महाप्रबंधक के रूप में हमारे बैंक में कार्य-ग्रहण किया है। आपने पटना विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर किया है। आपने 1985 में युनाइटेड बैंक में परिवीक्षाधीन अधिकारी के रूप में कार्य-ग्रहण करने के उपरांत सी.ए.आई.आई.बी. की परीक्षा पास की, साथ ही एम.बी.ए. (एच.आर.) की डिग्री भी हासिल की। यूनाइटेड बैंक के अपने कार्यालय के दौरान आपने पाँच वर्षों के लिए एस.टी.सी. कोलकाता के संकाय सदस्य के रूप में योगदान दिया। आपने बिहार तथा चण्डीगढ़ में क्षेत्रीय प्रबंधक के रूप में तथा प्रधान कार्यालय में खुदरा बैंकिंग एवं ऋण नीति तथा सूचना विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया।

पी.एस.बी. परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है।

-: आत्म-चिन्तन :-

- जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हज़ारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किन्तु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं। जो महापुरुष प्रचार-कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वे उन महापुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत अपूर्ण हैं, जो मौन रहकर पवित्र जीवनयापन करते हैं और श्रेष्ठ विचारों का चिन्तन करते हुए जगत की सहायता करते हैं। इन सभी महापुरुषों में एक के बाद दूसरे का आविर्भाव होता है - अंत में उनकी शक्ति का चरम फलस्वरूप ऐसा कोई शक्तिसम्पन्न पुरुष आविर्भूत होता है, जो जगत को शिक्षा प्रदान करता हैं।
- आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित हो चुकने पर धर्मसंघ में बना रहना अवांछनीय है। उससे बाहर निकलकर स्वाधीनता की मुक्त वायु में जीवन व्यतीत करो। मुक्ति-लाभ के अतिरिक्त और कौन सी उच्चावस्था का लाभ किया जा सकता है? देवदूत कभी कोई बुरे कार्य नहीं करते, इसलिए उन्हें कभी दंड भी प्राप्त नहीं होता, अतएव वे मुक्त भी नहीं हो सकते। सांसारिक धक्का ही हमें जगा देता है, वही इस जगत्स्वप्न को भंग करने में सहायता पहुँचाता है। इस प्रकार के लगातार आघात ही इस संसार से छुटकारा पाने की अर्थात् मुक्ति-लाभ करने की हमारी आकांक्षा को जाग्रत करते हैं।

- स्वामी विवेकानन्द

जीवन-बीमा क्यों?

- कामेश सेठी

आज कल ढेर सारी बीमा कंपनियाँ बाज़ार में हैं और निवेशकों के लिए ये चुनना बड़ा मुश्किल है कि कौन सी कंपनी और कौन सी स्कीम में पैसा निवेश किया जाए।

सबसे पहले तो ये जान लें कि जीवन-बीमा निवेश के लिए है ही नहीं। सबसे कम रिटर्न जीवन-बीमा में ही मिलता है। वास्तव में जीवन-बीमा में निवेश अपने परिवार को आर्थिक रूप से भविष्य के लिए सुरक्षित करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए अर्थात् यदि बीमित व्यक्ति का किसी कारण से निधन हो जाता है तो परिवार वालों को इतना धन उपलब्ध हो सके कि उनका जीवन निर्वाह आसानी से हो सके। यदि कोई व्यक्ति यह सोच कर बीमा कराए कि उसके धन में अच्छी-ख़ासी वृद्धि होगी तो उसका यह सोचना गलत है। गारंटी वाली स्कीमों में शायद ही किसी स्कीम में 6 प्रतिशत से अधिक वृद्धि होती है और यदि अचानक धन की आवश्यकता पड़ गयी तो फिर आधा धन ही स्वीकार करना पड़ेगा, उदाहरण के तौर पर :

जीवन-बीमा की पारंपरिक पॉलिसी पर यदि आपने निवेश लिया है तो बड़ी मुश्किल से 5 प्रतिशत या 6 प्रतिशत का फ़ायदा प्रतिवर्ष परिपक्वता के बाद मिलेगा। यदि आपको अचानक पैसों की ज़रूरत पड़ गई और बीच में ही पॉलिसी समाप्त करना चाहते हों तो आपको केवल जमा की हुई राशि का 60 प्रतिशत ही मिल पायेगा अर्थात् जमा की गई राशि पर ब्याज तो गया ही साथ ही जमा-राशि भी आधी हो गई।

अब बताते हैं कि जमा राशि भी आधी क्यों हो जाती है?

आप जो भी पैसा अपने जीवन-बीमा पॉलिसी में लगाते हैं उसका 35 प्रतिशत तक पहली बार में शेष 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष आपके एजेंट को कमीशन मिल जाता है। यदि एजेंट न हो तो शायद बीमा कंपनियों में तालों की नौबत आ जाए। अब आप समझ ही गये होंगे कि आपकी मेहतन की कमाई का कितना बड़ा हिस्सा एजेंटों को जाता है और कंपनी अपने कुछ ख़र्चों को काट कर आपकी जमा-राशि का आधा हिस्सा आपके सुपुर्द कर देती है।

अब आपको बताते हैं कि किस किस्म की पॉलिसी पर धन लगाया जाए? याद रखिए हमेशा बीमा कंपनी में टर्म-पॉलिसी में अपना धन

लगायें जो कि सही मायने में बीमा पॉलिसी है और एजेंट आपको इसकी राय शायद ही दें, क्योंकि इसमें उनको कमीशन बहुत कम मिलता है।

टर्म-पॉलिसी का मतलब है, यदि बीमित व्यक्ति का निधन किसी कारणवश होता है तो कंपनी को प्रीमियम का 25 से 50 गुना भुगतान करना पड़ता है।

उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति टर्म पॉलिसी के लिये प्रतिवर्ष 20,000/- देता है तो उसके निधन पर कंपनी को 20,000 x 50 = 10,00000/- रुपया देना पड़ेगा। इससे कंपनी पर भार भी बहुत बढ़ जाता है। जिस प्रकार हम एक कार या स्कूटर का बीमा कराते हैं। ठीक उसी तरह यदि बीमित व्यक्ति का निधन नहीं होता है तो कोई भी रुपये की वापसी नहीं होती है। यह एक बहुत सस्ती बीमा पॉलिसी है जो कि प्रत्येक व्यक्ति को लेनी चाहिये। अन्य सभी प्रकार की बीमा पॉलिसी केवल घुमा-फिरा कर वहीं खड़ी हो जाती हैं। यूनिट लिंक बीमा जोख़िम भरा होता है। उससे अच्छा आप सीधे शेयर बिज़नेस में उतर जायें। यदि आप किसी भी निवेश गुरू से बीमा की बात करें तो वह आपको निश्चित रूप से टर्म-बीमा के लिये ही प्रेरित करेगा।

- शाखा साकची, जमशेदपुर

पटना की उपेक्षित विरासतें

– राकेश चंद्र नारायण

अपनी विरासत को न जानना या उनकी उपेक्षा करना, अपने आप को धोखा देने के समान है। जो आज है, वह बीते कल का प्रतिफल है। नए निर्माण का प्रारंभ अतीत के गर्भ से होता है। अतीत से प्राप्त विरासत, वर्तमान में विकसित होकर आने वाली पीढ़ी को सौंपी जाती है। इनका संरक्षण अपने अस्तित्व की रक्षा करने के समान है। इसके बिना हमारा भविष्य दिशा-हीन हो जाएगा तथा हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता और निजता भी समाप्त हो जाएगी।

पटना छठी सदी ई.पू. से पाँचवीं सदी तक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक केंद्र रहा है। इसका विकास एक सैन्य शिविर के रूप में हुआ ताकि उत्तर की ओर से वज्जियों की आक्रमक कार्रवाई को रोका जा सके। गंगा, गंडक, सोन व पुनपुन इसकी सुरक्षा तथा व्यापार में सहायक थीं। महात्मा बुद्ध के समकालीन (छठी सदी ई.पू.) अजातशत्रु ने मगध साम्राज्य के विस्तार के लिए राजगीर से आकर पाटलीग्राम में अपने शासन की नींव रखी तथा उनके उत्तराधिकारी उदयिन् ने इस शहर को मगध साम्राज्य की राजधानी बनाया, जिस पर नंद, मौर्य, शुंग, गुप्त तथा पाल वंशों ने राज्य किया। तब से लेकर अब तक पटना शहर ने अनेकों बार उत्थान-पतन देखा है। समय के इस निरंतर प्रवाह में हमें अतीत की कई कला-संपदा प्राप्त हुई। विरासत से प्राप्त बहुत से चिन्ह व्यापक जन-जागरण के अभाव में आज विस्मृत हो रहे हैं। हमें अपने पूर्वजों के कलात्मक सृजन के प्रतीकों को जानना व उनका संरक्षण करना आवश्यक है।

इस शहर में सबसे पुराने अवशेष कुम्हरार में पाए गए हैं जो शहर के पूर्वी भाग में कंकड़बाग रोड पर स्थित है। इसकी खुदाई 1912-15 में डी.बी. स्पुनर, 1951-55 में ए. एस. अल्टेकर और विजय कांत मिश्र ने कराई। यहाँ की सबसे प्रसिद्ध प्राप्ति अस्सी स्तंभों वाले मौर्य कालीन सभागार के अवशेष हैं। इसकी विशेषता गोलाकार चिकने खंभे हैं। ये तीसरी सदी ई.पू. अशोक के शासन काल में आयोजित तृतीय बौद्ध संगति हेतु निर्मित सभागार के हैं। गुप्त कालीन आचार्य धनवंतरि द्वारा संचालित चिकित्सालय (आरोग्य विहार) के अवशेष भी ईंट की बनी कोठरियों के रूप में मिले हैं। सातवीं सदी के बाद के अवशेष उपलब्ध नहीं हैं, जिससे नगर के विनाश की पुष्टि होती है।

मीर अशरफ अली मस्जिद

प्राचीन काल की गोधूलि बेला में पाटलीपुत्र का गौरव लुप्त हो चुका था। इस नगर के जीर्णोद्धार का श्रेय अफ़ग़ान शासक शेरशाह को जाता है। तारीख़े दाऊदी के अनुसार 1541 में शेरशाह ने इस शहर के सामरिक महत्व और भौगौलिक स्थिति को देखते हुए एक मज़बूत क़िले का निर्माण कराया तथा इस पर पाँच लाख रुपये ख़र्च किए। यहाँ आज जालान परिवार का निवास स्थान है, जो क़िला कोठी कहलाता है। दीवान बहादुर राधा कृष्ण जालान ने यहाँ एक निजी संग्रहालय का निर्माण कराया जिसमें अनेक मूल्यवान ऐतिहासिक वस्तुएँ रखी गई हैं। शेरशाह ने इस शहर को बिहार की राजधानी बनाया जिससे तत्कालीन राजधानी बिहार (शरीफ़) का महत्व घटने लगा तथा समृद्धि बढ़ने लगी। 1580 में अकबर ने पटना में टकसाल और मुद्रणालय का गठन किया। यह आज के खाजकला में स्थित था। मुग़ल साम्राज्य के पतन के दिनों तक यहाँ सिक्के बनाने का काम होता रहा। इसके दक्षिण में मुगलकालीन न्यायिक अधिकारी सदर-उस-सुदूर की अदालत और आवास था। आज की सदर गली में सदर का निवास स्थल था।

18वीं सदी के प्रारंभ में अज़ीम-उस्म-शाह, मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के पोते ने गद्दी संभाली। इनके शासन काल में इस शहर को अज़ीमाबाद के नाम से जाना जाता था। शहर के नवनिर्माण पर एक करोड़ रुपये ख़र्च किए गए। 1738-1739 में नादिर शाह द्वारा दिल्ली में क़त्लेआम के बाद अज़ीमाबाद ही उत्तरी भारत का सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक और

सांस्कृतिक केंद्र बन गया। अजीम शाह ने अज़ीमाबाद को द्वितीय दिल्ली बनाने का प्रयास किया। यहाँ एक विशिष्ट चित्रकला का विकास हुआ जिसे पटना स्कूल ऑफ़ पेंटिंग कहते हैं। इस चित्रकला के संरक्षक यूरोपीय थे। इस चित्रकला में यहाँ का सांस्कृतिक जीवन, पशु-पक्षी के चित्र उकेरे जाते थे। इस चित्रकला को कंपनी स्कूल ऑफ़ पेंटिंग या 'पटना कलम' भी कहते हैं। सेवक राम (1785-1875) और हुलास लाल (1785-1875) प्रारंभिक काल के विख़्यात चित्रकार थे। इस कड़ी के अंतिम चित्रकार ईश्वरी प्रसाद वर्मा थे, जो लगभग 50 वर्ष पहले चित्रकारी करते थे।

नगर की पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाएँ पूरब और पश्चिम दरवाज़ा मुहल्लों के रूप में देखी जा सकती हैं। नगर की पूर्वी सीमा पर स्थित मालसलामी मुहल्ला मुग़लकाल में व्यापारिक सामान पर चुंगी (सलामी) वसूली का केंद्र था। इसके समीप मारूफ़गंज तथा मंसूरगंज दो महल्ले हैं, जो दो सूफ़ियों के नाम से जुड़े हैं। कहा जाता है कि अज़ीमाबाद को बसाने में चार सूफ़ी संतों तथा उनकी बहन ने सहायता की थी। हज़रत मारूफ़ शाह, हज़रत मंसूर शाह, हज़रत मेंहदी शाह, हज़रत नौजर ग़ाज़ी शाह तथा हज़रत बीबी आमना ख़ातून जिनकी मथानी क्रमशः मारूफ़गंज, बेग़मपुर (मोरचा रोड), नवाब बहादुर रोड, नौजर कटरा तथा खाजेकला

फैसारी मथानी

थाना में स्थित है। हज़रत मंसूर शाह की मथानी को फसियरी मथानी भी कहते हैं क्योंकि यहाँ पर 1857 के कुछ विप्लवियों को फाँसी दी गई थी।

पटना साहिब के दक्षिण की ओर बेगमपुर के धवलपुर मुहल्ले में हैबतजंग का मक़बरा है, जो हैदरअली का दामाद और नवाब सिराजुदौला का पिता था। यह वैभवयुक्त मक़बरा एक बाग़ में स्थित था। दरभंगा के अफगानों ने 1748 में इनकी हत्या कर दी थी। उनकी स्मृति में यहाँ मक़बरा एवं मस्जिद का निर्माण किया गया था। इस

सुदर्शन मंदिर

मक़बरे के ऊपर काले पत्थर पर उत्कृष्ट नक़्क़ाशी की गई है। यह मक़बरा लगभग 10 एकड़ के बड़े भूभाग में फैला है।

गुलज़ार बाग़ (जिसे मीर कासिम के भाई गुलज़ार अली ने बसाया था) स्टेशन के निकट कमलदह अपने दो प्राचीन जैन मंदिरों के लिए विख्यात है। यहाँ जैन मुनि सुदर्शन स्वामी का मंदिर एवं जैन संत स्थूलीभद्रजी की समाधि है। लगभग 200 वर्ष प्राचीन यह मंदिर जैन संत स्थूलीभद्रजी की तपोस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। जिन्होंने कोशा वेश्या के अभूतपूर्व सौंदर्य को नकारते हुए कठोर तप किया था। यह घटना तीसरी ई.पू. की है। संभवतः यह सबसे प्राचीन जैन शिल्प का अवशेष है। मंदिर की संरचना देखने से पता चलता है कि वह पावापुरी के समान जल मंदिर था। ब्रह्मचर्य के अडिग साधक सुदर्शन स्वामी के निर्वाण स्थली पर प्रतिवर्ष पौष शुक्ल पंचमी में निर्वाणोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। यहाँ 1972 ई. का एक अभिलेख उत्कीर्ण है। इन मंदिरों तक जाने का मार्ग संकीर्ण व कठिन है।

गुलज़ार बाग स्थित बड़ी पटनदेवी प्रमुख 51 शाक्तिपीठों में से एक है। माना जाता है कि यहाँ देवी सती के शरीर का दाहिना जंघा गिरा था। यहाँ महाकाली, महालक्ष्मी तथा सरस्वती की तीन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। मंदिर का भीतरी भाग सदियों पहले बना था, बाहरी भाग का जीर्णोद्धार बाद में किया गया। यह शहर की नगर देवी भी है। यहाँ से 3 कि.मी. दूर सिटी चौक के पूर्वी दरवाज़ा के निकट छोटी पटनदेवी का मंदिर भी एक प्रमुख शक्तिपीठ है। यहाँ भी महाकाली, महालक्ष्मी तथा सरस्वती की तीन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। पटना के ये दोनों स्थल हिंदू धर्मावलंबियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

गुलज़ार बाग़ रेलवे स्टेशन के निकट 2000 वर्ष से भी ज़्यादा पुराना विशालकाय कुआँ सम्राट अशोक से संबंधित है। इसे अगमकुआँ कहते हैं। कहा जाता है कि सम्राट अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या कर

पीर रमरिया

उनके शवों को इसी कुएँ में डाल दिया था। कुएँ से सटा शीतला माँ का मंदिर भी काफ़ी प्राचीन तथा हिंदू धर्मावलंबियों के लिए महत्वपूर्ण है।

पटना सिटी के सबलपुर में राजा मानसिंह का राजस्थानी और मुगलकालीन शैली में निर्मित विष्णु मंदिर अपनी विशिष्टता के लिए विख्यात है, यह बिहार का एकमात्र विष्णु मंदिर है। गया के विष्णुपद मंदिर में विष्णुपद है। मंदिर परिसर का क्षेत्रफल एक किलोमीटर लंबा तथा आधा किलोमीटर चौड़ा है। इसके परिसर में बाऊली कुआँ स्थित है जो अद्‌भुत और रहस्यमय है। कुएँ के भीतर झरोखा बना है जहाँ जाने के लिए सीढ़ी घर बना है। पहले यह मंदिर के प्रांगण में था पर अब दोनों के मध्य पटना सिटी बाई-पास रोड गुज़रता है। यह मंदिर चार-बाग़ शैली में बना हुआ है तथा एक इंच मोटाई के मुग़लकालीन ईंटों का उपयोग किया गया है। उचित देख-रेख के अभाव में यह दुर्लभ मंदिर जीर्णशीर्ण हो गया था, पर अब बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड ने इसकी मरम्मत का कार्य शुरू किया है।

पटना सिटी में अशोक राजपथ पर स्थित बेगू हजाम मस्जिद शहर की सबसे पुरानी मस्जिद है। 1510-11 में बंगाल के सुल्तान अल्लाउद्दीन शाह के शासनकाल में खाँ मुज्जम नजीर खाँ ने इस मस्जिद का निर्माण कराया था। 1646 में बेगू हज़ाम ने इस मस्जिद का जीर्णोद्धार कराया। जिसके नाम से यह मस्जिद जानी जाती है। मस्जिद के आँगन में चमकीले टाईल्स लगे हैं तथा दक्षिण-पश्चिम में सुंदर अलंकृत द्वार लगे हैं।

सुल्तानपुर स्थित पत्थर की मस्जिद (1625) को सम्राट जहाँगीर के बेटे और उस समय के बिहार के गवर्नर परवेज शाह ने बनवाया था। संपूर्ण पत्थर से बनी इस मस्जिद को 'संगी मस्ज़िद' के नाम से भी जाना जाता है। छः सौ साल पुरानी 'पीर दमड़िया मस्ज़िद' मुग़लकालीन स्थापत्य कला का अद्‌भुत नमूना है। नक़्क़ाशीदार गुंबद, जालीदार रोशनदान, विशाल दालान एवं मेहराब के साथ इस तीन गुम्बदों वाली मस्जिद में हर साल उर्स लगता है। यहाँ पीर दमड़िया बाबा और उनके परिजनों की मज़ारें हैं। बाबा के पैरों की छाप मस्जिद के भीतर संरक्षित है।

पटना सिटी के चौक शिकारपुर मुहल्ला में स्थित मीर अशरफ़ अली का मक़बरा (1775) वास्तुकला की बेजोड़ मिसाल है। हल्के गुलाबी रंग के पत्थरों से बने इस मक़बरे में विशाल फ़व्वारा भी है। इस मक़बरे का निर्माण मुग़लशैली के अंतिम दौर में आलीमगिरी के समय हुआ था।

पटना सिटी में चैनपुरा स्थित बाबा ज्ञानीदास जी उदासीन के मठ में 300 वर्षों से लगातार एक ज्योति नवमुखी ताम्रपात्र में प्रज्वलित है। जिसमें नवग्रह अंकित है। यहाँ हस्तलिखित गुरुग्रंथ साहिब की एक प्रति रखी है। साथ ही हनुमानजी की प्रतिमा भी है। बाबा ज्ञानीदासजी ने अपने योग बल से इस ज्योति की स्थापना की थी ताकि भारत की एकता निरापद रहे।

पटना सिटी के दीवान मुहल्ला के नौजरघाट में गंगा के तट पर 450 वर्ष पुराना भगवान चित्रगुप्त का मंदिर है। कहा जाता है कि सम्राट अकबर के वज़ीर, राजा टोडरमल एवं उनके नायब कुँअर किशोर बहादुर के नेतृत्व में 1574 में इसकी बुनियाद रखी थी। 1766 में महाराजा सिताब राय (जिनका प्रासाद अब खँडहर हो गया है) ने आसपास की ज़मीन उपलब्ध कराई तथा उनके नाती महाराजा भूप नारायण ने मंदिर का ढाँचा जयपुर से मँगवाकर तैयार कराया। यहाँ काले पत्थर की भगवान चित्रगुप्त की भव्य प्रतिमा स्थापित है। श्वेत वर्ण की स्फटिक प्रतिमा राजा राम नारायण के वंशज राय मथुरा प्रसाद द्वारा स्थापित कराई गई थी।

गुलजारबाग में भद्र घाट के पास अंग्रेज़ों ने अपनी फ़ैक्टरी स्थापित की

किला घर

जो आगे चल कर अफ़ीम के व्यवसाय का मुख्य केन्द्र बना। इस परिसर में अब राजकीय मुद्रणालय है। मुग़ल सम्राट शाह आलम-।। का राज्याभिषेक इसी इमारत में हुआ था। फ़ैक्टरी के 47 अंग्रेज़ अधिकारियों को नवाब मीर कासिम के फ्रांसिसी सेनानायक सोमरू ने अक्टूबर 1763 में मरवा डाला। इनकी याद में गुलज़ार बाग़ के ईसाइयों के क्रिस्तान में 1880 में स्मारकीय-स्तंभ का निर्माण अंग्रेज़ों ने करवाया जो आज भी सुरक्षित है।

पादरी की हवेली (1772) एक भव्य रोमन कैथोलिक चर्च है जिसका निर्माण इटली के वास्तुविद् तिरिस्ता ने किया था। इसे ऐतिहासिक रूप देने में बिशप हार्टमन का विशेष योगदान रहा है। 15 जनवरी 1884 को स्विट्ज़रलैंड से भारत आ कर हार्टमन ने इस चर्च में बिशप के रूप में कार्य किया। मदर टेरेसा ने यहाँ 1948 में चिकित्सा प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य किया था।

लगभग तीन किलोमीटर पश्चिम में प्रमुख वाणिज्य केंद्र मुरादपुर मुहल्ला जहाँगीर के प्रांत पति मिर्ज़ा मुराद के नाम पर पड़ा। जिनकी कब्र पटना चिकित्सा कॉलेज अस्पताल के परिसर में स्थित है। इसके पश्चिम दिशा में डेढ़ किलोमीटर पर गोलघर है, जिसका निर्माण कैप्टन जॉन गार्स्टिन ने 1786 में खाद्यान्न रखने के लिए किया था। इसके पश्चिम की ओर गंगा तट पर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की समाधि है।

इन स्मारकों व कलाओं के संरक्षण और विकास हेतु व्यापक जन-जागरण की आवश्यकता है। ऋग्वेद में कहा गया है 'नवो नवो भवति जायमनः' अर्थात् नए निर्माण का नाम ही जीवन है। नए निर्माण का प्रारंभ अतीत के गर्भ से होता है। ये स्मारक व कला न केवल अतीत की धरोहर को संभालने का कार्य करते हैं, बल्कि भविष्य के लिए प्रेरणा के स्रोत भी हैं।

- महाप्रबंधक

पौष्टिक नारियल पानी

- नारियल के पानी में दूध से ज़्यादा पोषक तत्व होते हैं क्योंकि इसमें कालेस्ट्रोल और वसा की मात्रा नहीं है। नारियल पानी में बेहद गुण पाए जाते हैं। इसमें बहुत अधिक मात्रा में इलेक्ट्रोलाइट और पोटोशियम पाया जाता है, जो ब्लड प्रेशर और दिल की गतिविधियों को दुरुस्त करने में सहयोगी होता है।
- इसके इस्तेमाल से रक्त स्राव तेज़ गति से काम करता है और पाचन-क्रिया भी दुरुस्त रहती है।
- नारियल का पानी न केवल शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है, बल्कि शरीर में मौजूद बहुत से वायरसों से भी लड़ता है।
- अगर आपको किडनी में पथरी की समस्या है तो यह आपके लिए बेहद उपयोगी साबित होगा।
- नारियल का पानी लगातार सेवन करने से किडनी में मौजूद पथरी अपने आप ख़त्म हो जाती है।
- अगर आपको किडनी से संबंधित अन्य कोई समस्या हो तब भी फ़ौरन एक गिलास नारियल पानी पी लीजिए, मिनटों में निजात मिल जाएगी।

कार्य-मुक्ति

- एस. एस. कालरा

आज सुबह हर दिन की तरह मैं पाँच बजे ही उठा। सैर मंडली ने प्रत्येक दिन की भांति मुझे जगाने के लिए डोर-बेल बजाया। सैर के लिए निकला और पार्क में दस कदम चलने पर भल्ला ने कहा "तो आज आप पूरी तरह से हमारी मंडली में हो" अभी मैं पूरी तरह से समझ नहीं पाया था कि सहगल साहब बोले "कितने साल नौकरी की?" मैंने बोला "पैंतीस साल" याद आया आज मेरा कार्यालय में अंतिम कार्य-दिवस है" अरे आज तो 30 अप्रैल है। आह! आज मैं रिटायर हो जाऊँगा"। पार्क में चलता हुआ भी मैं पार्क में नहीं था। आज सेवा का आख़िरी दिन है कल से मैं क्या करूँगा? सैर मंडली भारतीय राजनीति पर बहस करती मेरे साथ चल रही थी किंतु मैं अपनी धुन में बीते सालों को चलचित्र की भांति याद करता जा रहा था। सैर-मंडली का एक सदस्य बोला "क्या बात है आज बोलती क्यों बंद है?" मैंने कहा "अरे कोई बात नहीं"। पार्क में चक्कर पे चक्कर चलते रहे लेकिन मैं अपनी ज़िंदगी के पन्नों में उलझा हुआ सैर-मित्र-मंडली के साथ गुमसुम सा चल रहा था। इतने साल ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव में अपनी सेवा-मुक्ति को बिल्कुल भूल चुका था किंतु आज तो मेरा कार्यालय में अंतिम कार्य-दिवस है, मन बहुत उदास था। सैर-मंडली वापस आ रही थी।" अच्छा भाई बाय-बाय, हैव अ गुड डे "मुझे बाय करने के लिए हाथ उठाना पड़ा लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरा हाथ उठ ही नहीं रहा।

मैं यही सोचता हुआ घर की ओर चलने लगा कि "सबकी रिटायरमेंट होती है अकेली मेरी ही तो नहीं हो रही। कोई बात नहीं।" घर पहुँचा पत्नी चाय की मेज़ पर थी उसने कहा "अरे आज आप रिटायर हो रहे हैं यह तो खुशी की बात है, पूरी उम्र नौकरी करते रहेंगे क्या? अब थोड़ा आराम कीजिए।" मैं उदास नहीं हूँ, किंतु मन में ठहराव नहीं है। सोच रहा था रिटायर होते हुए कैसा लगेगा। मेरी बातचीत में मेरा दिमाग साथ नहीं दे रहा था, दिल की धक्-धक् की ध्वनि मेरे कानों में गूँज रही थी। पत्नी फिर बोली "क्या बात है आज आपका चेहरा उतरा हुआ क्यों है?" "अरे कुछ नहीं बस यूँ ही" मैंने जवाब दिया, पैंतीस साल से उसी दफ़्तर में हूँ। मेरे सामने कितने आदमी सेवा-मुक्त हुए याद नहीं। आज मेरा दिन है कोई और मेरी रिटायरमेंट देखेगा। ये तो चलता रहता है। मैं यह तो सोच रहा था किंतु मैं अपनी इस सोच से सहमत नहीं था।

प्रत्येक दिन की तरह मैं ऑफ़िस जाने के लिए तैयार हुआ। ड्राइवर कार निकाल कर मेरा इंतज़ार कर रहा था ड्राइवर ने कार का दरवाज़ा खोला हर रोज़ की तरह मैं कार में बैठा, ड्राइवर बोला "साहब चलूँ क्या?" आज शायद ड्राइवर ने पहली बार मुझसे ये सवाल पूछा, नहीं तो मैं बैठने के बाद हमेशा कहता था "चलो"। अपने आपको मैंने फिर से झकझोरा मैं फिर से सोच में पड़ गया कि मुझे क्या हो गया मेरी किसी भी हरकत में मेरा दिमाग साथ नहीं दे रहा है "क्या करूँ मैं?" फिर दिमाग में बात आई, अरे कोई बात नहीं सभी को एक-न-एक दिन रिटायर तो होना ही है आज मेरा दिन है। कार हर दिन की तरह चल रही थी किंतु मेरा दिमाग नहीं। घर से ऑफ़िस जाते हुए मुझे रास्ते में पड़ती लाल बत्ती और उससे पहले बिजली का खम्बा, रास्ते में लगे हुए पेड़ और फुटपाथ पर बैठे कुछ लोग, चाय की रेहड़ी, सड़क पर लगे बोर्ड, रास्ते में पड़ती दुकानें, चौराहे आदि ऐसे लग रहे थे जैसे मेरी ज़िंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हों। कार वैसे ही चल रही थी जैसे प्रतिदिन चलती आई थी, परंतु मुझे हर एक चीज़ मानो दिखाई ही नहीं दे रही थी, दिमाग में उधेड़-बुन चल रही थी। कल से मैं इस सड़क पर शायद ही कभी सप्ताह बाद आ पाऊँ। फिर दिमाग को झटका दिया कि मैं क्या सोच रहा हूँ रिटायर ही तो हो रहा हूँ, मर तो नहीं रहा। क्या मैं अपनी नौकरी आजीवन चाहता हूँ? कार चलती जा रही थी मैं सोचता चला जा रहा था। कैसा होगा मेरा रिटायरमेंट का दिन! ख़ास तौर पर जब मेरा परिवार भी मेरे दफ़्तर में पहुँचेगा। अरे क्या हुआ, देख लिया जाएगा। मुझे पता नहीं चला कब

कार दफ़्तर के सामने थी। मैं कार से उतरा, परंतु ऐसा लग रहा था जैसे पैरों में दम ही नहीं था, पूरे शरीर में कंपकपी सी हो रही थी। गार्ड ने सैल्यूट किया लेकिन मुझे याद नहीं कि मैंने उसे जवाब दिया या नहीं जबकि मैं तपाक से उससे रोज़ मिलता था। दफ़्तर में घुसा तो अपनी कुर्सी पर बैठने के बजाय उसे निहारे जा रहा था। कल मैं इस कुर्सी पर नहीं बैठूँगा। टेलीफ़ोन की घंटी बजी किंतु यूँ महसूस हुआ कि कानों को सुनाई नहीं दे रही। फ़ैक्स मशीन पर फ़ैक्स मैसेज आ रहे थे, मेरा मोबाईल बज रहा था, मेरे केबिन के बाहर सभी सहकर्मी मुझे निहार रहे थे शायद कुछ लोग मुझे यूँ देख रहे थे जैसे वो कह रहे हों कि "चलो यार पिण्ड छूटा"। कुछ ग्राहक भी मेरी ओर देख रहे थे इतने में मेरे निजी सहायक ने मुझे आज की मीटिंग व अन्य बातें बताने के लिए मेरे केबिन में प्रवेश किया। मुझे उसकी कोई भी बात नहीं सुनाई दे रही थी। "अरे यार मुझे क्या हो गया है?" मैं सोचता ही जा रहा था। निजी सहायक फिर बोला "साहब आज भाभी जी कब पहुँच रही हैं?" मैंने कहा "क्यों क्या हुआ?" वह हँसने लगा और बोला "सर आज आपकी रिटायरमेंट का दिन है।" मैंने कहा "अच्छा-अच्छा उनको चार बजे लाने के लिए ड्राइवर को भेज देना।" तीनों फ़ोनों की घंटी बज रही थी लेकिन मुझे सुनाई नहीं दे रही थी। फिर सोचा मुझे क्या हो गया किंतु मेरी सोच को जैसे ताला लग गया था। प्रतिदिन की भांति फाइलों का ढेर लगा हुआ था आज तो शायद सभी फ़ाइलों को निपटाना होगा "चलो देखते हैं।" फ़ाइल उठाता था लेकिन उसे पढ़ने का मन नहीं करता कुछ फ़ाइलें तो यूँ ही बिना पढ़े हस्ताक्षर कर रहा था। स्टाफ़ केबिन में घुसा मेरी रिटायरमेंट पार्टी हो रही थी। सभी स्टाफ़-सदस्य मुझे 'गुड लक' बोल रहे थे। मुझे अपनी टेबल पर पड़े पेपर वेट, पेन स्टैण्ड, सॉलिड पैड, टेलीफ़ोन, फ़ैक्स मशीन, कम्प्यूटर, कुर्सियां व सोफ़े सभी से प्यार हो गया था। अरे पैंतीस साल से इस दफ़्तर से भी बहुत प्यार हो गया था। दफ़्तर की प्रत्येक चीज़ मुझे अपनी सी लग रही थी, आज मैं दफ़्तर की हर एक चीज को जी भर कर देखना चाहता था। स्टाफ़ के साथ इन बेजान वस्तुओं को कितना चाहने लगा था। मैं इन वस्तुओं को कब देख पाऊँगा इसलिए मैं इनको भी छूकर प्यार करना चाहता था। मुझे हर एक स्टाफ़ घूरता हुआ दिखाई दे रहा था। पैंतीस साल से मैं उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ इस ऑफ़िस को अपने बच्ची की तरह प्यार करने लगा था। "क्या हुआ सर आज आप गुम हो गए हैं?" एक क्लर्क बोला किंतु मेरी सोच मेरे बोलने से भिन्न लग रही थी। चलो सभी पार्टी शुरू कर रहे हैं, मैं पार्टी के लिए चल ही रहा था कि अलार्म बेल बज उठी। मैं एक दम से उठा, अरे! यह तो सपना था किंतु यह सपना किसी न किसी दिन तो सच ही होने वाला है।

- आँचलिक कार्यालय, जालंधर

हमें इन पर गर्व है।

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-III में कार्यरत वरिष्ठ प्रबंधक, श्री हरजीत सिंह पुरी के सुपुत्र श्री पवनीत सिंह पुरी तथा उनके साथियों द्वारा एक ऐसे मोबाईल फोन का आवष्किार किया गया है, जिसे घड़ी की तरह कलाई पर बाँधा जा सकता है। कम्युनिकेशन प्रोफ़ेशनल श्री पवनीत सिंह पुरी को उनके इस नवोन्मेषी आविष्कार हेतु पी.एस.बी. परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

'आधार' पंजीकरण कैंप

बैंक द्वारा फाइनैंशियल इंक्लूज़न तथा समाज के आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को बैंक के निकट लाने और उनको अपनी पहचान प्राप्त कराने हेतु दिनांक 01.04.2013 से 05.04.2013 तक बैंक के प्रधान कार्यालय द्वारा दूसरा आधार कैंप लगाया गया जिसमें समाज के सभी स्तरों के लगभग 800 लोगों ने पंजीकरण करवाया।

बैंकिंग कल, आज और कल

- परमजीत सिंह बेदली

बैंकों का जब राष्ट्रीयकरण किया गया, उस स्थिति की तुलना जब हम बैंकिंग उद्योग की आज की स्थितियों से करते हैं, तो हम पाते हैं कि बैंकिंग उद्योग में काफी परिवर्तन हो चुका है। यद्यपि परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर रूप से चलती रही है किंतु पिछले 3-4 वर्षों में तो बहुत अधिक परिवर्तन हुए हैं। आज लाभप्रदता पर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है तथा इसे प्राप्त करने के लिए बैंक की कार्य-विधि के विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इसमें लाभप्रदता, निधियों के प्रयोग हेतु अधिक स्वायत्तता और विवेकाधिकार, प्रतियोगिता द्वारा कार्यक्षमता में वृद्धि, पूँजी अनुप्रेरण द्वारा स्वास्थ्य सुधार, परिचालन में पारदर्शिता और ऋणों की शीघ्र वसूली हेतु वातावरण निर्माण शामिल है।

स्वतंत्रता के बाद, भारत में आर्थिक विकास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरते नई शक्ति संतुलन के परिपेक्ष्य में एक धुरी के रूप में उभरा। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में जब आर्थिक विकास ही शक्ति का मापदण्ड बन गया तो भारत नये उभरते समीकरणों से अछूता नहीं रह सकता था। अमेरिका के साथ-साथ, जापान एवं चीन जैसी महाशक्तियों के उभरने के बाद भारत के परम्परागत दृष्टिकोण में परिवर्तन अपरिहार्य लगना स्वभाविक था। इसलिए सुधारों के प्रति एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण की ज़रूरत थी। यानि अर्थव्यवस्था के सभी घटकों में समान, संतुलित तथा समन्वित सुधार। वित्तीय-व्यवस्था किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है एवं अर्थव्यवस्था में सुधार का अर्थ है इसे समसामयिक रूप से पूरे अर्थतंत्र के प्रति सकारात्मक रूप से तत्पर एवं संवेदनशील रखना। बैंक इस वित्तीय व्यवस्था के केन्द्र बिंदु के रूप में कार्य करते हैं। पूरा वित्तीय तंत्र यहीं से जन्म लेता है। भारतीय बैंक भी राज्य द्वारा निर्देशित वातावरण में कार्य कर रहे थे। और उनकी भूमिका राज्य द्वारा निर्धारित की गई थी। चूंकि, राज्य ही अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा निदेशक था इसलिए पूरे वित्तीय तंत्र की भूमिका की धुरी भी राज्य ही था।

नब्बे के दशक में जब आर्थिक उदारीकरण के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में निजी तथा विदेशी पूँजी निवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ तो भारतीय वित्तीय व्यवस्था में सुधार अपरिहार्य हो गए। भारतीय बैंक मात्र गणनात्मक उपलब्धियों तक ही सीमित होते जा रहे थे। भारतीय बैंक एक ओर इस उदारीकृत व्यवस्था में अपने आपको अप्रासंगिक महसूस कर रहे थे तो दूसरी ओर, घरेलू उत्पादक इस नवीन वातावरण में स्वयं को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए और अधिक संसाधन जुटाने के साथ-साथ अपनी मध्यस्ता-क्षमता भी बढ़ाना चाहते थे। इन परिस्थितियों ने बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों को अपरिहार्य बना दिया। नब्बे के दशक में भारतीय बैंकों की आस्ति-गुणवत्ता का स्तर अत्यंत ख़राब था। जहाँ हमारी आर्थिक उत्पादकता अत्यधिक कम थी, वहीं उत्पादन लागत बहुत अधिक। बैंकों को एक ओर जहाँ अपनी वित्तीय स्थिति में सुदृढ़ता लानी थी वहीं दूसरी और अर्थव्यवस्था में बचत तथा पूंजी निवेश निर्माण अनुपात में भी गुणात्मक परिवर्तन करना था। यहीं से लेखा-पद्धतियों में पारदर्शिता की आवश्यकता भी उभरी। बैंकिंग क्षेत्र में पूंजी पर्याप्तता तथा विवेकपूर्ण लेखा मानदण्डों को लागू करना मील का पत्थर साबित

हुआ। भारतीय बैंकों में आस्ति-प्रबंधन अति-संवेदनशील कार्य था। बैंक की ब्याज दरें जहाँ एक ओर उत्पादन लागत को प्रभावित करती हैं, वहीं दूसरी ओर बैंकों की लाभप्रदता तथा वित्तीय सुदृढ़ता को भी सुनिश्चित करती हैं। इसीलिए भारतीय बैंकों ने कठोरतम मानदण्ड अपनाकर अपनी वित्तीय सुदृढ़ता का परिचय दिया। भारत सरकार तथा भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी इस दिशा में नीतिगत प्रयास किए, उनमें प्रमुख थे बैंकों को धीरे-धीरे परिचालनात्मक स्वायत्तता प्रदान करना।

भारतीय बैंक जब पूंजीगत साधन जुटाने के लिए बाज़ार में उतरे तो इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ा। बैंकों के तुलन-पत्र प्रबंधन और आस्ति-देयता प्रबंधन पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा और भारतीय बैंकिंग इतिहास में पहली बार देयता-प्रबंधन महत्वपूर्ण हो गया। विदेशी निवेशकों एवं निजी क्षेत्र के उच्च तकनीक विकास का नया वातावरण बना। इस प्रकार की तक्नीकी क्रान्ति ने एक ओर सेवा उत्पाद लागत कम कर दी तो दूसरी और ग्राहकों को सेवा का केन्द्र बिन्दु बना दिया। बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों का प्रथम चरण गुणात्मक परिवर्तन का था एवं सभी गणनात्मक उपलब्धियां गौण थी। भारतीय बैंकिंग व्यवस्था लाभप्रदता प्राप्त करने में आश्चर्यजनक वृद्धि करने लगी।

सन् 2002-03 में भारत में बैंकिंग की परिकल्पना करने के लिए यह आवश्यक है कि हम इससे पहले उपरोक्त भारतीय वाणिज्यिक बैंकिंग में हुए भारी परिवर्तनों पर भी दृष्टिगत करें जिसमें भारतीय निजी बैंकों का तेज़ी से विस्तार हुआ और हो रहा है। विदेशी बैंकों की कार्य-प्रणाली एवं विदेशी बैंकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। इससे निरंतर प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण बना जिसमें राष्ट्रीकृत बैंकों का बाज़ार अंश कम हुआ है। तथापि भारत के प्रमुख शहरी केंद्रों के उपभोक्ताओं ने विकल्पों के चयन में फैलाव, सेवाओं के अनुरूप मूल्य और सेवाओं में सुधार को देखा है। अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है।

आज की भारतीय बैंकिंग अब भारत के उद्योगों को बेहतर समर्थन प्रदान कर रही है और साथ-साथ अलग-अलग उपभोक्ताओं को अधिक से अधिक विकल्प उपलब्ध करा रही है। ग्राहक भी अब विविध प्रकार के नये उत्पादों सेवाओं के उन्नत स्तरों तथा ऐसे प्रतिस्पर्धियों की नई दक्षताओं के आदि हो चुके हैं जो दूसरे से अपनी प्रौद्योगिकी, बिक्री और कुशलता में आगे है, उत्तरोतर अधिकाधिक बदलाव की मांग कर रहे हैं। सभी बैंक अब नकदी प्रदान करने के पृथक साधन इज़ाद कर रहे हैं और नकदी अब स्वचालित गणक मशीनों (ए.टी.एम) डेबिट कार्ड और स्मार्ट कार्ड के जरिए उपलब्ध है। भविष्य में वह दिन दूर नहीं होगा जब नकदी विक्रय टर्मिनल रखने वाले व्यापारियों के जरिए भी उपलब्ध होगी। इसलिए वाणिज्यिक बैंकों को नई वास्तविकताओं के प्रति जागरूक होना होगा। शाखाओं का व्यापक विन्यास, अतिस्टाफ् से भरी वितरण प्रणाली और अपर्याप्त प्रौद्योगिकी निश्चय ही अवनति की ओर ले जाएगी। सामान्यतः तीव्र गति से इस विश्व में व्यापक आधार वाले बैंकों को भी और विस्तृत होने की आवश्यकता है। नई-नई शाखाएं भी खोली जा रही हैं। आज की बैंकिंग में तथा कल की जो बैंकिंग होगी उसमें भारतीय बैंकों की पारम्परिक कार्यप्रणाली के जरिए अन्य भारतीय राष्ट्रीयकृत बैंकों के साथ तथा निजी क्षेत्र के बैंकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के साथ-साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

अतः अगली शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों को ध्यान में रखते हुए भारतीय बैंकिंग का आपस में समामेलन होना आवश्यक है। साथ ही यदि उन्हें प्रतिस्पर्धा करनी है तो उन्हें प्रबंध करने की स्वतंत्रता देनी होगी। बैंकों के पास स्टाफ् बहुत ज़्यादा है और वे अत्यधिक विनियमों से दबे हुए हैं। यदि इन ऊपरी व्ययों को कम नहीं किया गया तो ये ऊपरी व्यय अपने प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले कई बैंकों को डुबो देंगे। बैंकों को नई दक्षताएं सीखने की आवश्यकता है। बैंकिंग प्रौद्योगिकी से संबंधित है। आज भारतीय ग्राहकों को कोई भी सेवा, जो वे प्राप्त करना चाहते हैं प्रौद्योगिकी के जरिए प्रदान कराना पहले ही संभव हो चुका है। भविष्य में बैंकों में मानव संसाधन का प्रभावी प्रबंधन महत्वपूर्ण होगा। ग्राहकों से व्यवहार के प्रबंधन के जरिए, सेवा प्रबंधन, धन, मुद्रा-उत्पादों को महत्व प्रदान करने, मूल्य-निर्धारण और उत्पादों का नवोन्मेषीकरण भी अन्यों को सर्वोत्तम से अलग करेगा। ग्राहकों की प्रतिसादता, ग्राहकों की सुविधानुसार ग्राहक-सेवा और यदि कोई गतिविधि गलत हो जाती है तो शीघ्रतापूर्वक उसमें सुधार करना भविष्य की नई दक्षताएं होगी। नई संस्थाओं को प्रौद्योगिकी प्रबंधन बिक्री और विपणन, मानव संसाधन प्रबंधन और सेवा प्रबंधन के जरिए ग्राहकों की संतुष्टि की नई दक्षताओं को सीखने की अत्यंत आवश्यकता है।

भविष्य और आज की बैंकिंग में ग्राहक सेवा को अधिक से अधिक सक्रिय बनाने तथा ग्राहकों को शीघ्र सेवा प्रदान करने हेतु कम्प्यूटरों का प्रयोग किया जाना अत्यंत ही आवश्यक हो गया है। यद्यपि कम्प्यूटर प्रतिष्ठापन काफी खर्चीला है, परंतु बैंकों की बहुआयामी एंव त्वरित बेहतर सेवा हेतु कम्प्यूटरीकरण अपरिहार्य है। इतना ही नहीं भविष्य में बैंकों को अपनी उत्पादकता एवं लाभप्रदता बढ़ाने के लिए भविष्य की बैंकिंग प्रणाली को उनकी आस्तियों का सही रूप से वर्गीकरण करना भी आवश्यक है। तथा जो आस्तियां बुरी हालत मे हैं उनको सही आय प्राप्ति के रूप में लाने के लिए सतत् प्रयत्न किए जाने चाहिएं।

विकासोन्मुख बैंकिंग पर्यावरण के लिए ग्राहक, ग्राहक-सेवा, उत्पाद एवं मानव संसाधन इत्यादि विभिन्न तत्व हैं, इनमें से किसी एक की भी अवहेलना होने पर संतुलन बिगड़ सकता है। आज सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 'सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय' बैंकिंग ने यह अनुभव करवा दिया है कि लाभप्रदता उनके लिए प्राणवायु है, अतः वाणिज्यिक संस्थान होने के नाते उनके कार्य-कलाप उत्पाद-प्रधान एवं लाभोन्मुखी होने चाहिए। आज और भविष्य की बैंकिंग में कार्य स्थल पर प्रभावी विपणन कला का प्रदर्शन तभी हो सकता है जब स्टॉफ़ में व्यवस्थागत दक्षता और व्यवसायिक, व्यवहारिक कुशलता हो। गुणवत्तायुक्त कार्य-निष्पादन की स्थिति को प्राप्त करने का यही एक प्रकार का रास्ता है। आज का बैंकिंग उद्योग अब एक सुविधाकारी उद्योग न बन कर एक चुनौती पूर्ण उद्योग बन गया है। हमें इस प्रकार के प्रतिस्पर्धा के वातावरण में नई सूझ-बूझ और कारगर रणनीति से आगे बढ़ना होगा। यह प्रसन्नता की बात है कि कुछ बैंकों से विशिष्ट सेवा शाखाएं सेवा पटल खोल कर एक सशक्त आधार का निर्माण कर लिया है।

इलैक्ट्रानिक प्रणालियों का प्रयोग आज की बैंकिंग प्रणाली में तेज़ी से बढ़ गया है तथा भविष्य में भी इसी क्षेत्र में और भी बढ़ने का उम्मीद रखी जा सकती है। आज के युग में स्वचालित टैलर मशीनों, कम्प्यूटरीकरण, बैंक-नेट, स्विफ्ट, सुदूर क्षेत्रों से कारोबार हेतु संदेश नेटवर्क (आर.ए.बी.एम.एन.) आदि के प्रभावी प्रयोग से अपने समस्त ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। आज इन प्रणालियों के विकास और विस्तार से आज की बैंकिंग को नए आयाम मिले हैं तथा भविष्य में भी और नए आयाम मिलने निश्चित हैं। आज न्वोन्मेष बैंकिंग ने व्यापार बैंकिंग, संविभाग बैंकिंग एवं प्रबंधन पट्टाकरण, क्रेडिट कार्ड, फैक्टरिंग, इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण, अभिरक्षा सेवा, आवास ऋण, जोख़िम प्रबंधन तथा बीमा आदि के माध्यम से अनेक लाभोन्मुखी सेवाओं का विस्तार किया है तथा भविष्य की बैंकिंग में बीमा क्षेत्र के और भी बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है।

अमध्यस्थीकरण के परिणामस्वरूप नए संदर्भों में बैंकों की भूमिका वित्तीय आपूतिकर्ता से अधिक एक निवेशक एवं परामर्शदाता की हो गई है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपनी प्रांसगिकता बनाए रखने के लिए बैंकों को अपनी विपणन कला का विकास करते हुए उन्नत प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर स्वयं को ''वित्तीय-महावाज़ारों' के रूप में स्थापित करना होगा। लाभप्रद निवेश एवं वित्तीय जोख़िम प्रबंधन में कुशलता और भी विकसित करनी होगी। बदलते परिवेश में व्यवसायगत दक्षता वाली नहीं कार्य संस्कृति समय की सबसे बड़ी मांग होगी। अंत में हमें आज और भविष्य की बैंकिंग प्रणाली के लिए डॉ. सी. रंगराजन द्वारा बताई गई बैंकिंग श्रेष्ठता के संबंध में 10 प्रमुख विशेषताओं की ओर ध्यान देना होगा जो कि निम्न प्रकार से दशाई गई हैं :

1. खुलेपन की संस्कृति और ऊपर से नीचे की ओर समान स्तर पर व्यापक सम्प्रेषण।
2. मजबूत साझे मूल्य।
3. लाभकारी कार्य निष्पादन।
4. कारोबार को ग्राहकोन्मुखी बनाना।
5. नए उत्पादों में निवेश करने की इच्छा।
6. सबल दिशा बोध।
7. सर्वोत्तम लोगों की भर्ती करने की प्रतिबद्धता।
8. प्रशिक्षण एवं सेवा वृत्ति के विकास में निवेश।
9. ग्राहक तथा उत्पाद सूचना प्रणाली।
10. मजबूत ऋण जोख़िम प्रबंधन।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आज की बैंकिंग को प्रतिस्पर्धी वातावरण में कामयाब होना है तो कमियों को दूर करने की भरपूर कोशिश करनी होगी क्योंकि 'Survial of the fittest' ही भविष्य में बैंकिंग की सफलता की कसौटी होगी।

- आंचलिक कार्यालय, लुधियाना।

नई शाखाएं

दिनांक 30.08.2012, पचोरी शाखा

दिनांक 18.10.2012, मंडी पेहवा, गुरदासपुर शाखा

दिनांक 25.09.2012, खुराई मोरेह, मणिपुर शाखा

दिनांक 27.09.2012, रणजीत नगर शाखा

दिनांक 09.11.2012, फग्गूवाल, पटियाला शाखा

दिनांक 29.11.2012 (स्थानांतरण), राजपुर मार्केट, गाज़ियाबाद शाखा

दिनांक 25.11.2012, रायपुर, चोली शाखा

दिनांक 29.11.2012, धीर, गुरदासपुर शाखा

नई शाखाएं

दिनांक 17.12.2012, शिलांग, मेघालय शाखा

दिनांक 21.12.2012, [illegible], पटियाला शाखा

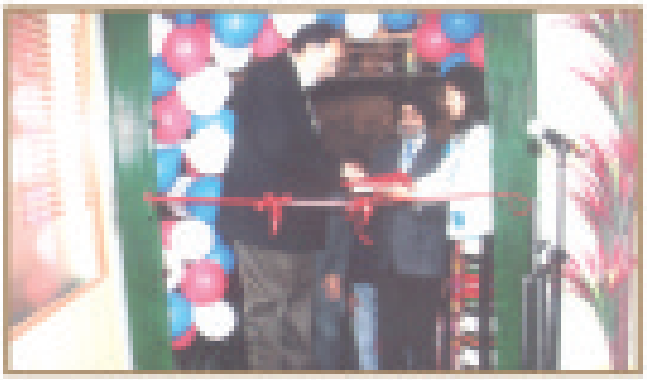

दिनांक 27.12.2012, आईज़ोल, मिज़ोरम शाखा

दिनांक 25.02.2013, [illegible] शाखा

दिनांक 27.02.2013, सैक्टर-5, फरीदाबाद शाखा

दिनांक 28.02.2013, सैक्टर-5, गुड़गांव शाखा

दिनांक 28.02.2013, सैक्टर-31, गुड़गांव शाखा

दिनांक 20.03.2013, [illegible], [illegible] शाखा

हिंदी-पंजाबी कार्यशालाएं

आंचलिक कार्यालय कोलकाता, दिनांक 14.12.2012

आंचलिक कार्यालय लखनऊ, दिनांक 21.12.2012

आंचलिक कार्यालय हरियाणा, दिनांक 17.01.2013

आंचलिक कार्यालय कोलकाता, दिनांक 31.01.2013

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-I, दिनांक 31.01.2013

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली-III, दिनांक 07.02.2013

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली-II, दिनांक 07.02.2013

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ दिनांक 15.03.2013

17वां
'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन'

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा पी.एस.बी. सेंटर फॉर बैंकिंग स्टडीज़ एण्ड ट्रेनिंग, चण्डीगढ़ में आयोजित '17वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' में प्रधानाचार्य एवं राजभाषा सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री एस.पी.एस. कालरी का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए प्रधान कार्यालय में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्रीमती शिल्पी सिन्हा एवं सुश्री मोनिका गुप्ता।

"हमारे मार्गदर्शकगण" राजभाषा परिवार द्वारा दीप प्रज्वलन

प्रधानाचार्य श्री एस. पी. एस. कालरी का सहभागियों को सम्बोधन।

विभिन्न कार्यशाला में उपस्थित राजभाषा अधिकारियों को महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री डी. एस. राणा का संदेश सुनाते हुए प्र.का. राजभाषा विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक एवं प्रभारी डॉ. परमजीत सिंह।

'हिंदी कार्य सहायिका' पुस्तिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि एवं राजभाषा विभाग के अधिकारीगण।

सम्मेलन में उपस्थित सहभागी।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ के तत्वावधान में आयोजित सांस्कृतिक संध्या में बैंक की सहभागिता

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ एवं मार्गदर्शन, चंडीगढ़ की पत्रिका "बैंक प्रभा" का विमोचन करते हुए स्थानीय प्रधान कार्यालय, चंडीगढ़ के महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह चहल।

सांस्कृतिक संध्या की प्रस्तुतियाँ

प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण योजन

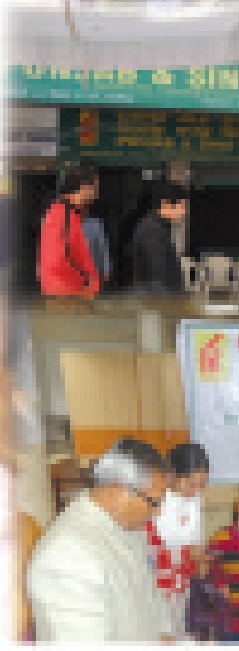

ना हेतु बचत जमा खाता शिविर

गतिविधियाँ

श्री डी. पी. सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं श्री पी. के. आनन्द, कार्यकारी निदेशक द्वारा बैंक के वर्ष 2013 के कैलेण्डर का विमोचन।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय कैलेण्डर पर हस्ताक्षर करते हुए।

श्री जी. एस. नारंग, आंचलिक प्रबंधक, लखनऊ, शाखा चारबाग लखनऊ में आयोजित सिक्का वितरण कैंप में ग्राहकों को सिक्के वितरित करते हुए तथा उ.प्र. आवास एवं विकास परिषद की "आवास विकास योजना" की आवेदन पुस्तिका ग्राहकों को प्रदान करते हुए।

उत्तर-पूर्वी भारत में बैंक के पहले ए.टी.एम. का दीमापुर में उद्घाटन करते हुए आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी के आंचलिक प्रबंधक, श्री कृपाल सिंह।

प्रशान्त विहार, रोहिणी शाखा, ए.टी.एम. का उद्घाटन।

कालकाजी, नई दिल्ली में नए ए.टी.एम. का दिनांक 15.03.2013 को उद्घाटन।

दिनांक 14-16 दिसंबर 2012 को जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ में आयोजित सेमिनार के दौरान बैंक द्वारा आयोजित शैक्षिक-ऋण जागरूकता कैम्प

जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ में सेमिनार के दौरान बैंक द्वारा आयोजित शैक्षिक ऋण जागरूकता कैम्प में माननीय श्री पी. के. आनन्द, कार्यकारी निदेशक महोदय का स्वागत करते हुए छात्र-गण।

जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ में आयोजित सेमिनार के दौरान इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर श्री पी. के. आनन्द, कार्यकारी निदेशक महोदय को प्रतीक चिन्ह प्रदान करते हुए।

जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ में आयोजित सेमिनार के दौरान बैंक द्वारा लगाए गए शैक्षिक-ऋण जागरूकता कैम्प में श्री जी. एस. भाटिया, आंचलिक प्रबंधक एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

दिनांक 17.12.2012 को आंचलिक कार्यालय, लखनऊ के शाखा प्रबंधकों के साथ हुई समीक्षा बैठक के दौरान श्री पी. के. आनन्द, कार्यकारी निदेशक महोदय शाखा प्रबंधकों को संबोधित करते हुए। साथ में है श्री जी. एस. सेठी, फील्ड महाप्रबंधक।

दिनांक 17.12.2012 को आंचलिक कार्यालय, लखनऊ के शाखा प्रबंधकों के साथ हुई समीक्षा बैठक के दौरान नेहरू शाखा की शाखा प्रबंधक सुश्री पूनम अवस्थी को काम जन योजना का पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री पी. के. आनन्द, कार्यकारी निदेशक महोदय एवं श्री जी. एस. सेठी, फील्ड महाप्रबंधक।

राजभाषा समाचार

पी.एस.बी. पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के अक्तूबर-दिसंबर 2012 अंक का विमोचन करते हुए कार्यकारी निदेशक महोदय श्री पी. के. आनन्द।

कार्यकारी निदेशक महोदय, पी.एस.बी. 'राजभाषा अंकुर' के विमोचित अंक पर हस्ताक्षर करते हुए।

दिनांक 04.01.2013 को पंजाब एंड सिंध बैंक नराकास के तत्वावधान में बैंक द्वारा आयोजित अंतर बैंक 'कहानी अधूरी...करें पूरी' प्रतियोगिता के आयोजन पर उपस्थित महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह चावला, उप महाप्रबंधक व आंचलिक प्रबंधक श्री जी. एस. कंवल, प्रधानाचार्य श्री एस. पी. एस. कालरा तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेदी।

दिनांक 13.02.2013 को लुधियाना नराकास द्वारा आयोजित 64वीं बैठक में आंचलिक कार्यालय, लुधियाना के मुख्य प्रबंधक श्री एस. पी. एस. चावला, राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु श्री जी. एस. रंधावा, मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष, नराकास से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

आंचलिक कार्यालय पटियाला

आंचलिक कार्यालय लुधियाना

आंचलिक कार्यालय फरीदकोट

स्थानीय प्रधान कार्यालय द्वारा किए जा रहे हिंदी संबंधी कार्यों का अवलोकन करते भारत सरकार, गृह-मंत्रालय राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अशोक कुमार सिंह। उनके साथ हैं महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह चावला, आंचलिक प्रबंधक, पटियाला श्री जी. एस. कंवल, [illegible] श्री [illegible], वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेदी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती [illegible] और [illegible] राजभाषा प्रबंधक सी. [illegible] कौर।

ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान, मोगा में आयोजित
'घरेलू उत्पादों के निर्माण संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम'

ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान, मोगा में आयोजित 'घरेलू उत्पादों के निर्माण के प्रशिक्षण कार्यक्रम' के दौरान रेड क्रॉस सोसायटी, मोगा की अध्यक्ष श्रीमती सुनीत कौर सिंह, पत्नी श्री एस. ए. एस. सिंह आई.ए.एस., डी. सी. मोगा का आगमन।

ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान, मोगा में आयोजित 'मधु-मक्खी पालन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम' में श्री एस. ए. एस. सिंह, आई.ए.एस. अधिकारी का आगमन।

दिनांक 25.03.2013 को पी.एस.बी. मोगा में ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान के निर्माण हेतु भूमि-पूजन।

भाभी

– देवेन्द्र पाल

माँ बताती थी कि हम दो ही पैदा हुए थे उसकी कोख से - मैं और श्याम भैया। मेरे जन्म के दो महीने बाद ही पिताजी भगवान के घर चले गए थे। माँ ने ही पाला-पोसा था हम दोनों को। घर में सम्पन्नता थी। पैसा, धन-दौलत की कमी नहीं थी लेकिन पिता के बिना कोई दुलार करने वाला न था। माँ तो ममता का अथाह सागर थी ही, लेकिन पिता.... पिता की कमी आज तक महसूस होती है मुझे।

माँ बताती थी कि मेरे पिता बहुत अच्छी नौकरी करते थे। इसके अलावा मेरे दादा-परदादा के वह अकेले वारिस थे, इसलिए ज़मीन-जायदाद से भी सम्पन्न थे। श्याम भैया को ज़मीन-जायदाद से ज़्यादा लगाव नहीं था। वे पढ़-लिखकर बहुत बड़ा आदमी बनना चाहते थे, वहीं माँ उनकी शादी कर देने के लिए उनके पीछे पड़ी थीं, "श्याम की शादी हो जाती तो घर संभालने वाली आ जाती और घर, घर लगने लगता।"

"आपकी बातें ठीक है-माँ! लेकिन अभी मैं पढ़ना चाहता हूँ और पढ़कर अच्छी नौकरी करना चाहता हूँ।" श्याम भैया का तर्क हुआ करता था।

"नौकरी इतनी ज़रूरी नहीं है श्याम, तेरे बाप-दादा का बहुत कुछ है। तुम चाहो तो दोनों भाई जीवन भर उससे खा सकते हो।" माँ अपना तर्क दिया करती थी।

और आखिर एक दिन माँ जीत गई थी।

माँ के मायके के दूर के कोई उसके भैया लगते थे उनकी बेटी को ब्याह कर, घर ले आई थी माँ। भैया ने माँ के आगे सिर झुका दिया था। भाभी, भैया से आठ साल छोटी थी और मैं भाभी की उम्र का। भाभी दीन-दुनिया के बारे में ज़्यादा नहीं जानती थी। भाभी का सबसे बड़ा दोस्त मैं बन गया था। भाभी मेरे साथ हँसती और गाती थी।

हम दोनों को खुश देखकर भैया बहुत खुश होते थे, तो माँ अंदर ही अंदर सुलगती रहती थी। माँ को भय था कि भाभी कहीं मुझे मोहित न कर ले।

"हर समय की ही-ही ज़्यादा अच्छी नहीं होती है। बहू हो तो बहू की तरह रहो, हाँ नहीं तो..... ।" माँ गाहे बगाहे डाँट देती थी भाभी को।

भाभी पर डाँट का ज़्यादा असर नहीं होता था। जैसे ही माँ घर से बाहर निकलती, भाभी और हम खुश हो जाते थे। फिर तो न जाने कितने खेल शुरू हो जाते थे। हम इकिया-दुकिया खेलते, भाभी एक टांग से कूदती और मैं भी कूदता। हम दोनों के बीच हार-जीत होती, मैं अक्सर ही जीतता था। भाभी कभी नहीं जीतती थी। शायद भाभी के नसीब में हारना ही लिखा था।

हम छिपा-छिपाई खेलते, भाभी घर में छिप जाती तो मैं उन्हें आसानी से ढूँढ लेता और मैं छिपता तो भाभी मुझे बहुत मुश्किल से ढूँढ पाती थी।

एक दिन क्या हुआ-भाभी छिपने के लिए भैया के कमरे में चली गई थी। प्रायः हम भैया के कमरे नहीं जाते थे क्योंकि भैया पढ़ते रहते थे और उनकी पढ़ाई का कोई हर्ज़ न हो इसलिए हम पूरा ध्यान रखते थे। भाभी जैसे ही भैया के कमरे में गई भैया ने भाभी को पकड़ लिया था और.....और..... । मैंने पूरा घर छान मारा। भाभी नहीं मिली थी। मैं हिम्मत करके भैया के कमरे में गया तो भाभी वहाँ भी नहीं थी। फिर देखा तो भैया भी नहीं। मैं जब कमरे से निकलने को हुआ तो भाभी ने कहीं से "कू" की। मैंने "कू" की आवाज़ की दिशा में देखा तो भाभी-भैया के बाहुपाश में समाई हुई थी। मैं सहम गया था और बाहर भाग आया था। दो दिन तक भाभी से नहीं बोला था मैं। भाभी और भैया मुझे दोनों दिनों तक मनाते रहे थे तब जाकर मैं माना था।

अथाह प्यार, अपनत्व और असीम श्रद्धा थी हम तीनों में लेकिन माँ को मुझे लेकर भय था। एक असुरक्षा ने उन्हें घेर लिया था।

भैया, भाभी को बहुत प्यार करते थे। भैया बहुत समझदार और पढ़ने में होशियार भी थे। "मोहन मैं जब कलक्टर बन जाऊंगा तब मैं तुझे अपने ही पास रखूंगा। माँ अभी नाराज रहती है जब तू बड़ा हो जाएगा तब तेरी भी बहू ला देंगे तब तो माँ की असुरक्षा ख़त्म हो जाएगी। तब तुम और तुम्हारी भाभी खूब छिपा-छिपाई खेला करना.... ।" भैया के स्नेह के आगे मैं झुक-झुक जाता था।

भैया रात में छः-छः, आठ-आठ घण्टे पढ़ते थे। एक ही धुन थी आई.ए.एस. बनेंगे। रात-रात भर की पढ़ाई ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा। एक दिन पता चला कि भैया को खांसी हुई और खांसी में ब्लड आया था। भैया को डॉक्टर के पास ले जाया गया था। पता चला भैया को टी.बी. हो गई है और ऐसी टी. बी. नहीं बड़ी भयानक, जिसके होते ही मृत्यु की टिकट हाथ में थमा दी जाती है। मैंने सुना तो मैं रो पड़ा था।

"मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता भैया।" मैंने उनके हाथ पकड़कर जब कहा तो भैया कुछ नहीं बोले थे सिर्फ आंखों की कोरों से दो मोती लुढ़कते हुए न जाने कहाँ बिखर गए थे।

पैसे को पानी की तरह बहाया गया था। मैं कुछ-कुछ समझदार हो गया था।

मैंने भैया के इलाज में ज़मीन-आसमान एक कर दिया-सारी जायदाद धन-दौलत लगा दी थी लेकिन भैया ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहे थे। हमारे पास अब सिर्फ़ घर और सात बीघा का एक खेत बचा था।

एक दिन माँ ने कहा भी था, ''मोहन तेरे भाई को तो अब कोई भी बचा नहीं सकता। तू तो कम से कम अपना ध्यान रख बेटा।''

''माँ भैया बच गए तो ऐसी दस जायदाद, बना दूंगा। बस मेरे भैया बच जाएं।'' माँ मेरी भावनाओं के आगे चुप हो गई थी।

भाभी को बहुत समझ अब भी नहीं आई थी। वे हमेशा हँसती रहती, कूदती रहती थी। जबकि मैं जानता था कि भैया अब मेहमान है। कभी भी बुलावा आ सकता है।

पिछले दिनों से जब से भैया बीमार हुए थे, मैंने एक बात पर ध्यान दिया था कि भैया अब भाभी को बहुत ज़्यादा प्यार करने लगे थे-शायद अपनी पढ़ाई के कारण भाभी को प्यार नहीं कर पाए थे, उसकी भरपाई कर रहे थे। भाभी मस्त रहती थी। अब भैया के हाथ-पाँव नहीं चलते थे। सुन्दरता की साक्षात् मूरत मेरे भैया चारपाई में मिल गए थे। वे मुझे पास बुलाते और कहा करते थे, ''मोहन वही वाला गाना सुनाओ न।''

''कौन सा वाला भैया।''

''वहीं चाँद वाला।''

मैं सुनाने लगता था

''ए चाँद आसमां के दम भर जमीं पे आजा

भूला हुआ है राही तू रास्ता दिखा जा.......।''

मैं गाते-गाते रोने लगता था लेकिन भैया रोते नहीं थे। वह छत की तरफ देखते रहते थे-मानो उनका चाँद आसमां से उतरकर नीचे आ जाएगा। वे शायद चाँद के बहाने भाभी को बुलाने की बात किया करते थे। वैसे भी उनका चाँद तो भाभी ही थी।

मैं उन्हें डॉक्टर के पास ले जाना चाहता था लेकिन उनसे उठा नहीं गया था तो मैं डॉक्टर को ही घर ले आया था। उस दिन माँ घर में नहीं थी। भाभी और मैंने ही भैया को दिखाया था। ''बस ओनली वन वीक'' कहकर डॉक्टर साहब चलने लगे थे। उस दिन..... उस दिन मैंने देखा था कि भाभी अचानक बड़ी हो गई थी।

''तुम्हारे भैया......मोहन तुम्हारे भैया हम सभी को......।'' मेरे कंधे पर सिर रखकर भाभी बुक्का फाड़कर रोई थी तो कब चुप हुई थी, कोई नहीं जानता। मैं उन्हें चुप कराते-कराते स्वयं भी रोने लगा था कि माँ आ गई थी। माँ क्या समझी क्या नहीं...... हम दोनों ने कोई चिंता नहीं की थी मां की।

जहाँ हम और भाभी, भैया की सेवा में जमीन-आसमान एक कर रहे थे वहीं, माँ न जाने कहाँ से ख़बर ले आई थी कि भाभी के लिए सात सुहागिनें न्योती गई हैं, कल उन्हें बुलाया जाएगा और भाभी उनकी पूजा करेंगी और उनसे अपने सुहाग अर्थात् भैया के लिए भीख मांगेगी। वे सभी माँ गौरा की पूजा करके भैया को प्रसाद के रूप में भाभी को देंगी और भैया बच जाएंगे।

भैया बहुत बुद्धिमान थे। ढोंग-ढकोसले में कतई विश्वास नहीं रखते थे फिर भी जब मृत्यु सामने खड़ी हो तो आदमी उससे बचने का जो रास्ता सामने दिखाई दे, उसे चुन लेता है। भाभी को उन्होंने ऐसा करने के लिए कह दिया था।

अगले दिन पूजा थी। भाभी ने अच्छी साड़ी पहनी थी। अब गहने पहनने थे। पूरे शृंगार के गहने बिल्कुल नई दुल्हन की तरह-गहने माँ की अलमारी में थे। माँ ने गहने नहीं दिए थे, ''अपने मायके से लाई है सो पहन, तेरा क्या है आज लिए, फिर कभी वापिस ही न करे। ....मेरे बेटे का क्या...... बचा न बचा..... तू तो गहने लेकर निकल जाएगी अपनी माँ के यहां.... हां नाँहि तो.... हम गहने नहीं देंगे।''

लाख कोशिशों के बाद भी माँ ने गहने नहीं दिए थे। मैं भी ज़िद पर अड़ गया था, ''आज मैं अलमारी का ताला तोड़ दूंगा, भाभी को गहने दे दो अम्मा।''

''तू पागल हो गया है....तेरे लिए ही तो संभाल के रखना चाहती हूं पगले.... तेरे भैया का क्या.... ये उठाए लहंगा चली जाएगी। तू समझने की कोशिश कर.... हां नाँहि तो.... ।'' माँ ने मुझे समझाया था। मैं नहीं समझा था लेकिन माँ के आगे हार गया था। कहा तो भैया ने भी था, ''दे दो अम्मा.... गहने.... शांति को एक बार ....सिर्फ़ एक बार उसे दुल्हन की तरह सजा-संवरा देखना चाहता हूँ।'' माँ ने भैया की बात को हवा में उड़ा दिया था। भाभी अधूरी दुल्हन ही बनी रही थी।

सात सुहागिनों में से एक दो ऐसी भी थी जो चूकना नहीं चाहती थी, ''ए दइया.... मैके से एक भी गहना नाँहि लाई....शांति।'' मैंने उन्हें घूरा था तो वे चुप हो गई थी।

माँ गौरा की पूजा हुई थी। सातों सुहागिनों ने भाभी की झोली भैया से भर दी थी। भाभी अधूरी दुल्हन बनी भैया के चरणों में सिर रखे न जाने कितनी देर तक रोती रही थी। सुहागिनें चली गई थीं।

और माँ गौरा की पूजा के ठीक अगले दिन....हाँ, हाँ अगले दिन ही तो .....मेरे भैया..... मेरे भैया।

भैया चले गए थे हमेशा-हमेशा के लिए। अल्हड़, मदमस्त हथिनी सी घूमने

वाली भाभी को उस दिन मैंने देखा था। उनके रोने से धरती का भी सीना फटा जा रहा था। मैं कभी भी नहीं जान पाया था कि भाभी-भैया को इतना चाहती थी। भाभी को मैंने संभालने की कोशिश की थी। माँ ने रोक दिया था मुझे।

भैया के चले जाने पर वही घर जो स्वर्ग सा लगता था....अब काट खाने को दौड़ता था। भाभी अब चहकती नहीं थी। शांत-चुप मानो तूफ़ान आकर चला गया हो और अपने पीछे बर्बादी और सिर्फ़ बर्बादी छोड़ गया हो।

भैया की मृत्यु के ठीक पंद्रहवे दिन माँ ने फ़रमान जारी कर दिया था, "बहू परसों तेरे पिताजी आएंगे उनके साथ अपने मायके चली जाना.... ।"

मैंने माँ से कहा भी था, "माँ भाभी तो इस घर की बहू है उसे इस तरह मत भेजो।"

"तो किस तरह भेजूं।"

फिर मेरे कान में कहने लगी थी, "तेरी भाभी को टी.बी. होना पक्का है.... यहाँ रहेगी तो तुझे और मुझे भी ख़तरा है। इसका जाना ही अच्छा है।"

उस दिन मुझे माँ पर बहुत गुस्सा आया था। मैंने माँ से बोलना बंद कर दिया था।

भाभी चली गई थी पर बहुत गुस्सा आया था। मैं उन्हें देखता रहा था। अपने पिता के साथ जाते-जाते उन्होंने आख़िरी बार मुझे देखा था और... रोई थी या नहीं ....मैं नहीं जानता। बस, उसके बाद तो वह चल नहीं रहीं थीं भाग रही थीं मानो कोई उनका पीछा कर रहा हो।

भैया की मृत्यु की पहली होली के पश्चात् माँ ने मेरी शादी की बात शुरू कर दी थी। मैंने शादी के लिए मना कर दिया था। माँ गुस्सा थी और मैं जिद्द पर।

एक दिन माँ सुबह घूमने गई थी। हमारा सात बीघा खेत था वहाँ से लौटकर आ रही थी और अपने साथ कुतिया का पिल्ला भी ले आई थी, "लौट रही थी खेत से.....ये..... ये..... मेरे पैरों को चूमने लगा था....साड़ी खींच रहा था .... बिल्कुल ऐसे ही... हाँ ...हाँ बिल्कुल ऐसे ही .....श्याम छोटे पर मेरी साड़ी खींचा करता था .... इसे ले आई हूँ ....मुझे तो ऐसा लगता है जैसे इसमें मेरे श्याम की आत्मा समा गई हो।" और माँ उस कुतिया के पिल्ले को श्याम-श्याम पुकारे जा रही थी।

मुझे लगा था कि किसी ने मुझे जलती हुई आग में झोंक दिया हो, ".....और जिसमें श्याम भैया की आत्मा बसती थी ....उसे तो एक महीने भी घर में नहीं रहने दिया .....उसका क्या.... वाह अम्मा वाह .....अपने बेटे की आत्मा खोजी भी तो किसमें .... इस कुतिया के इस पिल्ले में।

"तू चुप कर .....हां नांहि तो।" माँ ने मुझे डांट दिया था।

मैं बहुत खिसियाया हुआ था। माँ जैसे ही घर से बाहर गई थी मैंने उस कुतिया के पिल्ले को बोरी में बंद किया और दूर एक तालाब के पार फेंक आया था। कुतिया का वह पिल्ला लौटकर फिर कभी नहीं आया था।

भाभी का असीम और निश्छल प्यार..... भैया की यादें साथ लिए ख़ूब मेहनत करता रहा था मैं। भैया की तरह बुद्धिमान तो नहीं था मैं, फिर भी उनका कुछ असर तो रहा ही था कि शिक्षा अधिकारी बन गया था। स्कूलों का निरीक्षण करना आदि मेरे काम थे। बहुत बड़ा स्टाफ़ था। शानो-शौकत थी ....लेकिन न जाने क्यों एक कांटा सा चुभता रहता था।

उस दिन एक स्कूल का निरीक्षण करने पहुँच गया था। स्कूल के कर्मचारी, अध्यापक, प्रिंसिपल और बच्चे मेरे स्वागत में हाथ बांधे खड़े थे। निरीक्षण के पश्चात्, सांस्कृतिक कार्यक्रम था। सरस्वती वंदना के पश्चात् एनाउंस हुआ था, "अब आपके सामने कक्षा सात का विद्यार्थी रमेश एक गीत प्रस्तुत करेगा।" बहुत सुन्दर और मासूम सा एक किशोर माइक पर आया था और गाने लगा था,

ए चाँद आसमां के दम पर भर जमीं पे....

उसने अभी गाना शुरू ही किया था कि मैं चीख पड़ा था, "भैया.... ।"

गीत बंद करवा दिया गया था। सब लोग परेशान थे। प्रिंसिपल सन्न रह गया था "....यह क्या हो गया। कहीं रिपोर्ट ख़राब न लिख दें साहब.... ।" सुंदर और मासूम सा वह किशोर सकपका गया था। मेरे आँसू थे कि थम ही नहीं रहे थे फिर भी मैं बोला था, "बच्चे को पूरा गाना गाने दो।"

भूला हुआ है राही तू रास्ता दिखा जा..... ।

....."

जब तक बच्चा गाना गाता रहा मैं सिसकता रहा था। फिर मैं उठा और प्रिंसिपल रूम में चला आया था। प्रिंसिपल भी मेरे साथ-साथ सहमा-सहमा सा चला आया था।

"साहब, शांति का बेटा.....बहुत अच्छी और नेक दिल महिला है शांति..... हमारे यहाँ काम करती है।" फिर प्रिंसिपल ने अपने एक अध्यापक से कहकर शांति को बुलवा लिया था।

श्वेत साड़ी में लिपटी ममता, स्नेह और प्यार की साक्षात् उस देवी को देखकर मेरे होंठ कब बजने लगे थे कोई नहीं जान पाया था, "भाभी।"

और भाभी, वह तो मुझे अपलक निहारे चली जा रही थी।

- वित्त-मंत्रालय, वित्तीय सेवाएँ विभाग

नई दिल्ली

आईपीएल टूर्नामेंट / व्यापार

- चरनपाल सिंह सोबती

अब न तो ओलंपिक और एशियाई खेल गैर पेशेवर रहे और न ही राष्ट्रीय स्तर के और कोई टूर्नामेंट। किसी भी टूर्नामेंट का आयोजन, भले ही वह क्रिकेट हो या अन्य कोई खेल, लगातार महंगा होता जा रहा है और इसीलिए आयोजक न सिर्फ़ टूर्नामेंट के प्रायोजित होने से अपना खर्चा निकालना चाहते हैं, मुनाफ़ा भी कमाना चाहते हैं। इससे आगे बढ़कर अब तो पेशेवर लीग का आयोजन भी शुरू हो गया है। पिछले दिनों भारत में हॉकी प्रीमियर लीग का आयोजन हुआ।

भारत में इस तरह की पेशेवर लीग की परंपरा को भारतीय क्रिकेट बोर्ड की इंडियन प्रीमियर लीग यानि कि आईपीएल ने शुरू किया। असल में एक टेलीविजन चैनल के इंडियन क्रिकेट लीग यानि कि आईपीएल नाम के टूर्नामेंट ने जब कुछ अच्छे क्रिकेटरों को पैसे का लालच देकर अधिकृत क्रिकेट छोड़कर अपने लिए खेलने के कांट्रेक्ट दिए तो यह भारतीय बोर्ड के लिए एक चुनौती थी। यह नज़ारा बहुत कुछ वैसा ही था जैसे कि 1977 में आस्ट्रेलिया में चैनल 9 के मालिक कैरी पैकर ने अपनी वर्ल्ड सीरिज क्रिकेट के लिए भारत के अतिरिक्त अन्य सभी देशों के बेहतरीन क्रिकेटरों को कांट्रेक्ट देकर अपनी क्रिकेट के लिए बुला लिया था। ये सभी क्रिकेटर तब अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से बाहर हो गए थे।

आईपीएल की चुनौती ने भारतीय क्रिकेट बोर्ड को प्रेरणा दी आईपीएल की शुरूआत की। 2008 वह साल था वह जब भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने आईपीएल की घोषणा की और इसके लिए टीमें बेची। 2008 में 8 टीमें बनीं। शहर के आधार पर टीम खरीदी गईं और अलग-अलग लोगों ने बोली लगाकर शहर के लिए टीम खरीदी। जिन्हें टीम मिली उन टीम मालिकों ने अपने-अपने शहर की टीम को रोचक नाम दिए।

बेंगलूर की टीम 'रॉयल चेलेंजर्स-बेंगलूर' कहलाई और 10 साल के लिए 111.6 मिलियन डॉलर की कीमत पर इसे खरीदा गया। चेन्नई की टीम 'चेन्नई सुपर किंग्स' कहलाई और इसे 91 मिलियन डॉलर में खरीदा गया। मोहाली की टीम 'किंग्स इलेवन-पंजाब' कहलाई और इसे 76 मिलियन डॉलर में खरीदा गया। दिल्ली की टीम 'दिल्ली डेयरडेविल्स' कहलाई और इसे 84 मिलियन डॉलर में खरीदा गया। कोलकाता की टीम 'कोलकाता नाइट राइडर्स' कहलाई और इसे 75.09 मिलियन डॉलर में खरीदा गया। हैदराबाद की टीम 'डेक्कन चारजर्स' कहलाई और इसे 107 मिलियन डॉलर में खरीदा गया। मुम्बई की टीम -मुम्बई इंडियंस' कहलाई और इसे 111.9 मिलियन डॉलर में खरीदा गया। जयपुर की टीम 'राजस्थान रॉयल्स' कहलाई और इसे 67 मिलियन

डॉलर में खरीदा गया।

इस तरह सबसे सस्ती टीम 'राजस्थान रॉयल्स' की बनी और सबसे महंगी टीम 'मुम्बई इंडियंस' थी। उस समय किसी को भी यह अंदाज़ा नहीं था कि टीम मालिक जो पैसा ख़र्च कर रहे हैं वह उन्हें आख़िर में फ़ायदा पहुँचाएगा या घाटा? टीमों को खिलाड़ी भी अपने आप नहीं मिले - इन्हें खरीदना पड़ा। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने खिलाड़ियों का एक पूल बनाया जिसमें अपने और विदेशी खिलाड़ी थे। हर खिलाड़ी की न्यूनतम कीमत तय की गई और टीमों ने बोली लगाकर खिलाड़ियों को खरीदा। बोर्ड ने हर टीम मालिक द्वारा खर्चे जाने वाले पैसे को एक सीमा में बांध दिया ताकि ऐसा न हो कि जिसके पास ज़्यादा पैसा है वह और किसी को अच्छे खिलाड़ी लेने ही न दे।

आईपीएल एक शुद्ध व्यापार मॉडल पर आयोजित हो रहा टूर्नामेंट है। यूरोप की पेशेवर लीग से प्रेरणा लेकर इसका ढांचा तैयार किया और जहाँ एक तरफ इसमें क्रिकेट को मनोरंजन के लिए खेल रहे हैं, वहीं टीम मालिक और बोर्ड दोनों पैसा कमाने की कोशिश कर रहे हैं। टीम मालिक ने जिस कीमत पर टीम को खरीदा उसके अतिरिक्त उनके दो बड़े खर्चे और हैं - मैचों के आयोजन पर पैसा खर्च करते हैं और हर साल नियमित खिलाड़ियों के अतिरिक्त अन्य दूसरे खिलाड़ियों को खरीदते हैं। 3 फरवरी 2013 को आईपीएल के 6 वें सीजन के लिए खिलाड़ियों की नीलामी हुई ताकि जिस-जिस टीम में कोई कमी है वे ज़रूरत के हिसाब से खिलाड़ी खरीद लें। आस्ट्रेलिया के ग्लेन मैक्सवैल इस नीलाम में सबसे महंगी कीमत पर बिके। उन्हें मुम्बई इंडियंस ने 10 लाख डॉलर में खरीदा।

टीम मालिकों की कमाई कहाँ से होती है? कमाई के दो बड़े जरिए हैं - खुद कमाई करें और दूसरी वह जो बोर्ड से मिलनी है। हर टीम हर सीजन में अन्य दूसरी टीम के साथ दो मैच खेलती है - एक अपने शहर में और एक दूसरी टीम के शहर में। अपने शहर में जो मैच आयोजित करते हैं उसकी पूरी कमाई उनकी होती है यानि कि गेट मनी और स्टेडियम में विज्ञापन का पूरा पैसा उन्हें मिलता है। इसी तरह जब वे दूसरी टीम के शहर में खेलने जाते हैं वहाँ मेजबान टीम पैसा कमाती है। टीम मालिक अपनी-अपनी टीम के लिए अलग-अलग प्रायोजक ढूँढकर भी पैसा कमाते हैं।

बोर्ड उन्हें पैसा देता है सेंट्रल फंड में से। बोर्ड ने पूरे टूर्नामेंट के टेलीविजन प्रसारण अधिकार बेचे। ये अधिकार इस समय मल्टी स्क्रीन मीडिया और वर्ल्ड स्पोर्टस ग्रुप के पास हैं जो 10 साल में बोर्ड को रू. 8700 करोड़ देंगे। इसके अतिरिक्त बोर्ड ने टूर्नामेंट के टाइटल अधिकार बेचे। पहले 5 साल यह टूर्नामेंट डीएलएफ आईपीएल कहलाया और 5 साल के लिए डीएलएफ ने रू. 200 करोड़ दिए। अगले 5 साल के लिए पेप्सी प्रायोजक है टूर्नामेंट के और वे रू. 397 करोड़ देंगे। बोर्ड को इस तरह के कांट्रेक्ट बेचकर हर साल जो पैसा मिल रहा है उसमें से खर्चा निकालकर वे टीमों के बीच बांटते हैं। इस तरह टीमों की कमाई बढ़ती है। इस समय जबकि टूर्नामेंट को 5 साल हो चुके हैं तो कई टीम मुनाफ़े में चल रही हैं।

आईपीएल के 3 साल पूरे होने पर टीम की गिनती बढ़ाई गई। इन 3 साल में आईपीएल टीमों की ब्रैंड वैल्यू बहुत बढ़ चुकी थी और इसलिए नई बनी दो टीमें बेहद महंगी कीमत पर बिकीं। पुणे शहर की टीम 370 मिलियन डॉलर में और कोच्चि शहर की टीम 333.3 मिलियन डॉलर में बिकी। पुणे की टीम को 'सहारा पुणे वारियर्स' और कोच्चि की टीम को 'कोच्चि टस्कर्स केरल' का नाम मिला।

कोच्चि के टीम मालिकों द्वारा कांट्रेक्ट की कुछ शर्तें पूरे न किए जाने के कारण बोर्ड ने उन्हें टूर्नामेंट में खेलने से रोक दिया है और अब यह टीम भंग हो चुकी है। इसी तरह हैदराबाद की टीम भी विवाद में फंसी और बोर्ड ने उनका भी कांट्रेक्ट रद्द कर दिया। हैदराबाद की टीम की जगह लेने के लिए बोर्ड ने नई टीम बनाने की घोषणा की और 12 शहरों को इस लिस्ट में शामिल किया। आख़िर में हैदराबाद शहर की टीम के लिए ही सबसे बड़ी बोली लगी और नई टीम बन चुकी है जिसका नाम 'सनराइजर्स हैदराबाद' है। ये टीम पिछली दो टीम की तुलना में अपेक्षाकृत सस्ती कीमत पर बिकी और वे 5 साल के लिए सिर्फ़ रू. 425 करोड़ देंगे।

नया टूर्नामेंट 3 अप्रैल से शुरू हो रहा है और इसमें कुल 9 टीम खेलेंगी। अभी से इस टूर्नामेंट की चर्चा शुरू हो चुकी है और अब क्रिकेट के कैलेंडर में आईपीएल को बड़ी लोकप्रियता मिलती है। विदेशी खिलाड़ियों के खेलने के कारण आईपीएल के मैच बड़े लोकप्रिय हो रहे हैं। यहाँ तक कि क्रिकेट की अंतर्राष्ट्रीय संस्था आईसीसी इसे अपने क्रिकेट कैलेंडर में अलग दिन देने के बारे में सोच रही है ताकि दुनिया भर के खिलाड़ी इसमें खेलने के लिए आ सकें।

2008 में इस टूर्नामेंट को 'राजस्थान रॉयल्स' ने, 2009 में 'डेक्कन चारजर्स' ने, 2010 और 2011 में 'चेन्नई सुपर किंग्स' ने तथा 2012 में 'कोलकाता नाइट राइडर्स' ने जीता। आईपीएल की देखा-देखी अन्य दूसरे देशों ने भी इसी ढांचे पर लीग का आयोजन शुरू कर दिया है और श्रीलंका एवं बंगलादेश में इस तरह की लीग शुरू भी हो चुकी हैं।

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली (I)
नई दिल्ली

हिंदी सिनेमा और मुस्लिम समाज

- हिमांशु राय

भारतीय सिनेमा में समय, स्थान और देश-काल के अनुरूप कई परिवर्तन आए। जिनका स्पष्ट प्रभाव फ़िल्मों में देखने को मिलता है। किसी भी दौर में जो भी फ़िल्में बनी उन फ़िल्मों में किसी न किसी रूप से, किसी न किसी संस्कृति से जुड़ाव रहा। जैसे 'बैजू बावरा' (1942) को लें, तो इस फ़िल्म में नायक-नायिका के बीच प्रेम कहानी के साथ-साथ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, गुरू-शिष्य के संबंध, संगीत की महिमा का गुणगान भी किया गया है। भारतीय फ़िल्मों में एक ख़ास समाज या धर्म को लेकर भी फ़िल्में बनती रहीं और कामयाब भी होती रहीं। अपनी भाषा-शैली, संस्कृति और रीति-रिवाज़ों से मुस्लिम समाज एक अलग ही पहचान रखता है। भारतीय सिनेमा भी इस समाज से अछूता नहीं रहा और समय-समय पर इस समाज पर कभी इसकी भाषा-शैली, संस्कृति और कभी रीति-रिवाजों को लेकर फ़िल्में बनीं और समाज को एक नयी दिशा दी। सिनेमा जब से शुरू हुआ तब से ही निर्माताओं को इस समाज ने आकर्षित किया और इसकी शुरूआत 30 के दशक में ही शुरू हो गयी। 40 के दशक में 'शाहजहाँ' (1946) और 50 एवं 60 के दशक में 'अनारकली' (1953), 'मुमताज़ महल' (1957), 'मुग़ल-ए-आज़म (1960), 'चौदहवीं का चाँद' (1960), 'छोटे नवाब (1961), 'मेरे महबूब' (1963), 'बेनज़ीर' (1964), 'ग़ज़ल' (1964), 'पालकी' (1967), 'बहु-बेगम' (1967) आदि फ़िल्में बनी। उस दौर में जो भी इस समाज को लेकर फ़िल्में आयी, ज़्यादातर ऐतिहासिक ही थीं। इस प्रकार की फ़िल्मों में ख़ास संगीत और ख़ालिस इसी समाज की भाषा प्रयोग की जाती थी। फ़िल्मांकन और कलाकारों के हाव-भाव से ही इनको पहचान लिया जाता है।

थोड़ा आगे चलकर 70 और 80 के दशक में इस समाज की फ़िल्मों में कुछ बदलाव ज़रूर आये लेकिन भाषा-शैली और संस्कृति अब भी वही रही। इस दशक ने इस समाज के परदे को हटाकर कोठों पर ला खड़ा किया। अब नवाब या सामंती स्वामी पान चबाते हुए अपना धन, कोठों पर नाचने वाली तवायफ़ों पर लुटाते नज़र आते हैं। 'उमराव जान' (1972) और 'पाकीज़ा' (1982) ने इस समाज की शक्ल ही बदलकर रख दी। लेकिन भाषा-शैली और संस्कृति से इस दौर में कोई छेड़-छाड़ नहीं की गयी। 70 के दशक से ही समानांतर सिनेमा की शुरूआत हुई तो इससे ये समाज भी अछूता नहीं रहा और 'एलान' (1971) और 'सलीम लंगड़े पर मत रो' (1990) जैसी फ़िल्में आई। 'सलीम लंगड़े पर मत रो' (1990) निम्न मध्य वर्गीय युवाओं की अच्छी समीक्षा करती है। 'गरम हवा' (1973) उस दौर की एक और उत्तम फ़िल्मों की श्रेणी में खड़ी हो सकती है जो विभाजन के वक्त लगे ज़ख़्मों को कुरेदती है।

इस दौर की दो इसी समाज पर बनी फ़िल्में जो इस पूरे समाज की फ़िल्मों का प्रतिनिधित्व करती हैं वे हैं, 'निकाह' (1982) और 'बाज़ार' (1982)। एक तरफ 'निकाह' में जहाँ मुस्लिम समाज में प्रचलित 'तलाक' (1982) में शब्द पर वार किया तो वहीं दूसरी तरफ 'बाज़ार' ज़्यादा उम्र के व्यक्ति के एक नाबालिक लड़की के साथ शादी की कहानी है। यहाँ हम बताते चलें कि 'उमराव जान' मिर्ज़ा रुसवा' नामक उपन्यास पर आधारित थी। 70 के दशक में कुछ फ़िल्मों में एक समाज के किरदार भी डाले गए और वो किरदार भी ख़ूब चले, यहाँ तक कि वे फ़िल्मों को नया मोड़ देने के लिए काफी थे। 'मुकद्दर का सिकंदर' में 'जौहरा बाई' व 'शोले' में 'रहीम चाचा' इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। अलीगढ़-कट शेरवानी, मुँह में पान चबाते हुए, ज़ुबां पर अल्लामा, इक़बाल या मिर्ज़ा ग़ालिब की ग़ज़ल गुनगुनाते हुए एक अलग ही अंदाज़ में चलना तो बताने की ज़रूरत नहीं है कि ये किरदार किस समाज से ताल्लुक रखते हैं। घर की औरतें या तो पारंपरिक बुरके या फिर भारी-भरकम लहंगा और घाघरा पहने नज़र आती है। बड़ी उम्र की औरतें जैसे अम्मीजान नमाज़ में मशगूल होती हैं या फिर पान चबाते हुए घमंडी तरीके की चाल में जब दरवाज़े का पर्दा उठाते हुए बाहर आती हैं तो दर्शक समझ जाते हैं कि ये वक्त ग़ज़ल का आ पहुँचा है जो मुजरे की शक्ल में होगा।

80 के दशक का अंत होते-होते और 90 के दशक की शुरूआत में इस समाज की फ़िल्मों का चेहरा पूरी तरह से बदल चुका था। अब तक जो

किरदार पहले 'रहीम चाचा' की शक्ल में डाले जाते थे अब वो तस्कर बन चुके हैं। फ़िल्म 'अंगार' (1980) को हम उदाहरण के लिए ले सकते हैं। जहाँ एक तरफ ख़ालिस इस समाज के प्रति समर्पित फ़िल्में बनी तो वहीं दूसरी तरफ हिंदू-मुस्लिम को मिलाने के लिए भी इस समाज की फ़िल्मों का सहारा लिया गया। याद दिला दूं 60 के दशक का वो गीत 'तू हिंदू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा' इसका अच्छा ख़ाका खींचता है। इस प्रकार की श्रेणी में 'ईमान धरम' (1977) 'क्रांतिवीर' (1994) आदि को ले सकते हैं। 90 से अब तक इस समाज का दूसरा रूप ही सामने आया है जिसे आतंकवाद का नाम दिया गया है। इस तर्ज़ पर भी अनगिनत फ़िल्में बनी और बन रही हैं। 'सरफ़रोश' (1999), 'माँ तुझे सलाम' (2000), 'पुकार' (2000), 'फ़िजा' (2000), 'मिशन कश्मीर' (2000) के नाम लिए जा सकते हैं।

छोटे-छोटे घरों से गाँव बनता है, छोटे-छोटे गाँवों से ज़िला और फिर राज्य बनकर देश बनता है। इसी प्रकार छोटे-छोटे समाजों और संस्कृतियों से संपूर्ण भारतीय संस्कृति बनी हुई है। लेकिन इतना तो तय है कि समाज कोई भी हो संस्कृति कोई भी हो, भारतीय समाज अपने आप में एक संपूर्ण समाज और संस्कृति है जिसमें न कुछ जोड़ा जा सकता है और न कुछ निकाला जा सकता है।

- प्र.का. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

पाठकों/लेखकों के लिए सूचना

उल्लेखनीय है कि हमारे बैंक को स्थापित हुए 100 वर्ष से अधिक हो गए हैं, अतः यह निर्णय लिया गया है कि बैंक के इतिहास एवं इसकी धरोहर के बारे में सभी लोगों को अवगत कराने हेतु 'राजभाषा अंकुर' का अप्रैल-जून, 2013 का अंक **पंजाब एण्ड सिंध बैंक की विकास यात्रा/स्थापना दिवस अंक** के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस अंक में बैंक का इतिहास (स्थापना दिवस 24 जून, 1908 से अब तक) बैंक की विभिन्न एवं विशिष्ट योजनाओं, उपलब्धियों सचित्र जानकारी, बैंक की शाखाओं, कार्य व्यापार आदि के बारे में संक्षिप्त जानकारी आदि प्रकाशित की जाएगी।

इसी श्रृंखला में **जुलाई-सितंबर, 2013 का अंक 'राजभाषा विशेषांक'** के रूप में प्रकाशित किया जाएगा, जिसमें राजभाषा नीति एवं इसके कार्यान्वयन संबंधी प्रमुख नियम/अनुदेश, वार्षिक कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी, राजभाषा और हमारा बैंक, पिछले 25 वर्षों में हमारे बैंक के विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में राज्य स्तरीय तथा अखिल भारतीय स्तर पर उपलब्धियाँ (राजभाषा शील्ड एवं पुरस्कार) आदि की सचित्र जानकारी, बैंक द्वारा प्रायोजित बैठकों एवं आंतरिक राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन, बैंक द्वारा प्रकाशित साहित्य की सचित्र जानकारी एवं राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े विविध लेखों आदि का प्रकाशन किया जाएगा।

आपसे अनुरोध है कि अपने कार्यालय/शाखा में कार्यरत समस्त स्टाफ़ को इसकी जानकारी देते हुए प्रेरित करें तथा इन विशेषांकों में प्रकाशन हेतु लेख, छायाचित्र एवं अन्य सामग्री शीघ्र भिजवाएं।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं अन्य सामग्री पर मानदेय का भी प्रावधान है।

- मुख्य सम्पादक

पतित-पावनी यमुना

- डॉ. नीरू पाठक

भारत की सर्वाधिक पवित्र एवं प्राचीन नदी का नाम जब जिह्वा पर आता है तब पतित-पावनी माँ गंगा के साथ यमुना जी का नाम भी आता है। नदी का गौरवशाली रूप ऐसा कि 'जी' का प्रयोग नाम के साथ अपने आप ही हो जाता है और जहाँ तक ब्रज संस्कृति का संबंध है तो यमुना को केवल नदी कहना पर्याप्त नहीं बल्कि यमुना नदी और उनके तट ब्रज संस्कृति का आधार हैं। ब्रज कवियों ने तो इन्हें यमुना मैया संबोधित किया है। ब्रह्मपुराण में इनके आध्यात्मिक स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए इन्हें सच्चिदानंद स्वरूप कहा है।

यमुना जी का उद्गम स्थान हिमाच्छादित कालिंद पर्वत है। जिसके नाम पर इन्हें कालिंदी भी कहा जाता है। अपने उद्गम से हिम कन्दराओं से होते हुए इनका प्राकट्य यमुनोत्री से होता है। जिसके नाम पर ही इनका प्रचलित नाम यमुना पड़ा। समुद्रतल से 20731 फीट ऊँचाई से यमुनोत्री पर्वत से निकलकर अनेक पहाड़ियों-घाटियों में गर्जन-तर्जन के साथ प्रवाहित होती तथा छोटी-छोटी कई नदियों को अपने में समेटे यह दून घाटी में प्रवेश करती है तथा मैदानों की ओर बढ़ती जाती है। अपने तटीय मैदानों को सींचती हुई, शहरों को समृद्धि देती हुई, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा के बड़े भू-भाग के लिए यमुना मात्र नदी नहीं बल्कि जीवनीदायिनी अमर स्रोत है। इनके ठीक तट पर बसा सबसे बड़ा एवं प्राचीन शहर "दिल्ली" है। दिल्ली के लाखों नगरवासियों की जल आपूर्ति करती हुई व नगर की गंदगी को बहाती हुई ओखला से मथुरा, वृंदावन, आगरा, फ़िरोजाबाद, इटावा तथा अंततः प्रयाग को तीर्थराज का दर्जा देती हुई यमुना जी का माँ गंगा से संगम होता है। इस प्रकार यमुना अपने उद्गम स्थल से लेकर प्रयागराज तक 830 मील का सफ़र तय करती है। जगह-जगह तटवर्तीय नगरों में जल-आपूर्ति करती हुई, मैदानों को धन-धान्य से पूर्ण करती, प्रकृति को संतुलित करते वन खण्डों को सिंचित करती, कृष्ण भक्तों की आध्यात्मिक तृप्ति करती आगे बढ़ती है। किंतु प्रश्न यह उठता है कि हम अपने इस बहुमूल्य, प्राकृतिक ईश्वरीय वरदान के साथ क्या कर रहे हैं? जिस प्रकार हज़ारों वर्ष पूर्व सरस्वती नदी अदृश्य हो पृथ्वी के गर्भ में सैकड़ों मील नीचे चली गई और उत्तरी-पूर्व भारत का विशाल उपजाऊ भू-भाग थार मरुस्थल की बंजर रेतीली भूमि बन गया तथा अंततः वहाँ से मानो जीवन ने ही पलायन कर दिया। क्या यमुना नदी को भी हम उसी ओर नहीं ले जा रहे। एक ओर यमुना नदी पर बने अंधाधुंध बाँधों से बँटा जल और बचे हुए जल में शहरों की गंदगी, उद्योगों का रासायनिक विष जो यमुना जल को निरंतर दूषित कर रहा है। पानी में सीसा, लौह एवं जस्ते जैसी भारी धातुएं है जिसको पीकर निरंतर रोगों में वृद्धि हो रही है तथा रोगी पर कोई भी एन्टीबायटिक भी असर नहीं करता। संयुक्त राष्ट्र ने तो यमुना को पहले ही मृत नदी घोषित कर दिया है। हमें अपनी यमुना नदी को बचाना होगा। हमें आज/अभी प्रण लेना होगा, ऐसे उपाय करने होंगे जिससे कि यमुना की सुरक्षा की जा सके। इसके लिए कारगर उपाय

करने होंगे। सर्वप्रथम यमुना में छोड़े जाने वाली गंदगी की दिशा बदलनी होगी। शहरों की गंदगी का साफ़ किया पानी सिंचाई तथा खाद दोनों का कार्य कर सकता है। नदी पर बाँध बने, पर उसकी भी एक सीमा निर्धारित की जानी चाहिए। आज तो आलम यह है कि यमुना का 95 प्रतिशत जल बाँधों द्वारा उपयोग होता है तथा बचा 5 प्रतिशत जल, जल न होकर केवल प्रदूषित रसायन ही है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार भक्तगण यमुना नदी को माँ यमुना कह सहस्र नामों से उनकी स्तुति करते थे। सूर्यदेव इनके पिता तथा मृत्यु के देवता यम इनके भाई माने जाते हैं। इनमें स्नान कर भक्तगण पाप मुक्त, रोग मुक्त हो पवित्र हो जाते थे। किंतु आधुनिकीकरण की होड़ में नदियों को दूषित कर उनके विलुप्तिकरण में सहायक हो हम स्वयं अपने ही दुश्मन बन बैठे हैं। कुछ वर्षों पूर्व जहाँ कल-कल बहती जलधारा बहती थीं वहाँ आज बदबूदार रसायन के सिवा कुछ नहीं। दिल्ली के निकट नोएडा में नदी का कुछ ऐसा ही स्वरूप देखने को मिलता है तथा दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के बीच लगभग 100 कि.मी. भू-भाग ऐसा है। जहाँ से यमुना अदृश्य हो गई हैं जहाँ कुछ वर्ष पूर्व नदी बहती थी वहाँ सूखी रेत की सड़क पर गाड़ियाँ, ट्रक आदि दौड़ रहे हैं। ऐसी संकटपूर्ण स्थिति हमें बार-बार झकझोर रही हैं क्योंकि हम सभी यह जानते हैं कि आने वाले युग में यदि ध्यान न दिया गया तो पैट्रोल से भी ज़्यादा हमें जल संकट का सामना करना होगा। पैट्रोल के बिना जीवन संभव है किंतु जल के बिना जीवन असंभव है। हम सभी को प्रण करना होगा कि प्राणस्वरूपा यमुना नदी को प्रदूषण मुक्त करने में हम भी सहयोग करेंगे।

- शाखा जनकपुरी, नई दिल्ली

रचनाकार कृपया ध्यान दें

- रचनाएँ साफ़-साफ़ लिखावट में या टाइप करके भेजें।
- प्रकाशन हेतु भेजी गई रचनाओं में भाषा संबंधी त्रुटियों पर विशेष रूप से ध्यान दें।
- साहित्यिक आलेखों के अतिरिक्त बैंकिंग, सूचना-तकनीक, प्राथमिकता क्षेत्र, विदेशी विनिमय, जोख़िम प्रबंधन, मानव संसाधन से जुड़े आलेख भी सादर आमंत्रित है।
- प्रकाशन हेतु भेजी गई रचनाएँ मूल रूप से लेखक द्वारा स्वःरचित हों, उन्हें कहीं से कॉपी/नकल न किया गया हो।
- किसी भी रचनाकार की रचनाओं को लगातार प्रकाशित नहीं किया जाएगा।
- सभी प्रकार की रचनाओं के लिए आकर्षक मानदेय की व्यवस्था भी की गई है।
- प्रबंधन द्वारा प्रकाशित रचनाओं के लिए मानदेय का भुगतान करने हेतु ईसीएस सिस्टम द्वारा मानदेय सीधे बैंक खाता में अंतरित करने का निर्णय लिया गया है। अतः रचनाओं के साथ आप अपना नाम, पता, फोन नं. और अपने बैंक खाता संख्या की जानकारी अवश्य भेजें।
- अस्वीकृत रचनाओं की सूचना देना संभव न होगा, अतः इस संबंध में फ़ोन या पत्र-व्यवहार न करें।

- मुख्य संपादक

सकारात्मक सोच

- मोनिका गुप्ता

हम सभी को सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। सकारात्मक सोच से हम विषम परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सकते हैं। ज़िंदगी कभी भी एक जैसी नहीं चलती, कभी सुख तो कभी दुःख आता-जाता रहता है। ज़िंदगी में सुख कम, संघर्ष ज़्यादा होता है परंतु जो व्यक्ति सकारात्मक सोच रखकर संघर्ष से नहीं घबराते, वही सुखों के असली हक़दार होते हैं। सकारात्मकता के लिए लक्ष्य का होना अति आवश्यक है। क्योंकि जब लक्ष्य होगा तब हम धैर्य से काम लेंगे। अपनी शालीनता और सूझ-बूझ के ज़रिए और सकारात्मक सोच के द्वारा उस लक्ष्य को ज़रूर पा लेंगे। जैसे हमारे शरीर को स्वस्थ रहने के लिए शुद्ध और विभिन्न प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। ठीक उसी प्रकार हमारे मस्तिष्क को भी स्वच्छंद और उत्साह से भरे विचारों की आवश्यकता होती है। क्योंकि हम जैसी सोच रखते हैं, हमारी ज़िंदगी में वैसा-वैसा ही होने लगता है। हमें अपने विचारों के प्रति हमेशा सतर्क रहना चाहिए। जिस दिन नकारात्मक चीजों में भी सकारात्मक पक्ष तलाशना सीख जाएंगे उस दिन कोई भी मुश्किल आपका मनोबल गिराने में सफ़ल नहीं हो पाएगी। किसी विद्वान ने कितना सुंदर कहा है :-

दुःख संकट और आपदा हर किसी पे आए

ज्ञानी काटे ज्ञान से और मूर्ख काटे रोए ।

सकारात्मक सोच के लिए कर्म के प्रति बाध्य रहना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में नकारात्मक सोच नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति एक न एक दिन अपनी मंज़िल पा ही लेता है।

सकारात्मक सोच पर एक उदाहरण है, जैसे एक गिलास आधा भरा हुआ है और दो अलग-अलग व्यक्तियों से पूछा जाए तो एक कहेगा कि गिलास आधा भरा है और दूसरा व्यक्ति कहेगा कि गिलास आधा खाली है। यह सकारात्मक सोच ही तो है कि उस सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को गिलास आधा भरा दिखाई दे रहा है। सकारात्मक सोच से व्यक्ति नकारात्मक सोच होते हुए भी, जो उसके पास वर्तमान में होता है उसके प्रति सजग एवं कृतज्ञ रहता है। किसी भी कार्य को करने से पहले हम कहते हैं कि यह नहीं हो सकता परंतु सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हमेशा कहता है कि सब काम हो जाएगा और अच्छे से होगा।

सकारात्मक सोच के लिए आत्मविश्वास की बहुत ज़रूरत होती है। आत्मविश्वास ही तो इंसान को ज़िंदगी में सब कुछ देता है। अगर हम सकारात्मक विश्वास रखते हैं कि हमारी ज़िंदगी अच्छी है तो हमारी ज़िंदगी में वैसा-वैसा सकारात्मक होने लगता है। आत्मविश्वास इस दुनिया में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण है परंतु ध्यान रखें आत्मविश्वास सकारात्मक होना चाहिए। उसके बाद कोई कुछ भी माँगें, पूरी दुनिया उसकी मुट्ठी में होगी, जीत उसी की होगी।

रख हौसला मंज़र भी आएगा, प्यास के पास समंदर भी जाएगा।

थक कर ना बैठ ऐ मंज़िल के मुसाफ़िर, मंज़िल भी आएगी और मिलने का मज़ा भी आएगा।

सकारात्मक सोच के कारण ही व्यक्ति अपने को खुश रख सकता है और दूसरों को भी खुश रख सकता है। सकारात्मक सोच रखने से व्यक्ति का मन, विचार, शरीर की बनावट भी वैसी ही हो जाती है। ऐसे व्यक्ति सभी का मन मोहित कर लेते हैं। इसीलिए हर परिस्थिति में खुश रहना चाहिए।

सकारात्मक सोच के चलते ज़िंदगी हमें वह सब देती है जो हम सोचते हैं। इसीलिए अपनी सोच को सकारात्मक रखते हुए - अपने दिल, दिमाग को हमेशा सकारात्मक विचारों से ही भरना चाहिए। जब हम बुरी स्थिति का डटकर सामना करते हैं तो परिस्थितियाँ बदलने लगती हैं।

सकारात्मक सोच के द्वारा ही व्यक्ति में त्याग, सहनशीलता, अपनापन, आदर-सत्कार आदि गुण उत्पन्न होते हैं। प्रकृति का भी यही नियम है कि प्रकृति को हम जैसा देते हैं प्रकृति भी हमें वैसा ही देती है। बल्कि सौ गुना करके देती है। अगर हम किसी भी सकारात्मक सोच के साथ अच्छा बोलते हैं तो हमारे साथ अच्छा ही होता है परंतु अगर हम नकारात्मक सोच रखते हैं तो हमारी ज़िंदगी में भी विषम परिस्थितियाँ आने लगती हैं। इसीलिए हमेशा अपनी ज़िंदगी में सकारात्मक सोच ही रखनी चाहिए। हमेशा दूसरों को और अपने को भी यही कहना चाहिए कि 'सब ठीक है' और 'सब ठीक ही होगा'। ऐसा कहने से हमारे दिल की धड़कन पूरे उत्साह से भर जाती है तथा उसमें एक प्रतिशत भी संदेह या नकारात्मक भाव नहीं होता। बस दिल और दिमाग एक ही केंद्र-बिंदु पर केंद्रित हो जाते हैं और अपने लक्ष्य में सकारात्मक सोच रखते हुए लक्ष्य की प्राप्ति कर लेते हैं। फिर उन्हें कुछ भी ग़लत या नकारात्मक दिखाई नहीं देता।

यह तभी संभव हो सकता है जब हम अपने शब्दों, विचारों, भावनाओं का ध्यान रखें। जीवन में कभी भी हारना नहीं चाहिए। हार को हार मानना ही नकारात्मकता है। अगर हम अपनी हार से सीख लें तो हम वह गलती दुबारा नहीं दोहराते और आगे सकारात्मक सोच रखते हुए ज़िंदगी को ढंग से जीते जाते हैं।

- प्र.का. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता

हिंदी के व्याकरण, स्वर व व्यंजन के उच्चारण तथा वाग्यंत्र के उपयोग का ध्यान से अध्ययन करें तो पता चलता है कि हिंदी भाषा अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक समृद्ध सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक है :

- इसकी लिपि देवनागरी है, जिसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए ध्वनि चिह्न विद्यमान हैं जबकि रोमन लिपि में ऐसा नहीं है।
- हिंदी में आधे तथा चौथाई वर्ण के उच्चारण के लिए भी ध्वनि चिह्नों की व्यवस्था है रोमन लिपि में यह व्यवस्था भी नहीं है।
- हिंदी की वर्णमाला अत्याधिक सुव्यवस्थित है - जिसमें क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग तथा प वर्ग। ये पाँच-पाँच वर्णों के पाँच वर्ग है, जबकि विश्व की किसी भाषा में ऐसी वैज्ञानिक सुव्यवस्था नहीं है।
- प्रत्येक वर्ग का प्रथम वर्ण अल्पप्राण, दूसरा महाप्राण, तीसरा अल्पप्राण, चौथा महाप्राण तथा पाँचवा अल्पप्राण है।
- प्रत्येक वर्ग का अन्तिम वर्ण अनुस्वार है।
- प्रत्येक वर्ग के पहले तथा दूसरे वर्ण अघोष हैं जबकि तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण सघोष है। अन्य भाषाओं में ऐसी सुव्यवस्था भी नहीं है।
- पाँचों वर्गों का उच्चारण वाग्यंत्र के अवयवों के क्रमानुसार होता है - जैसे कण्ठ्य से क वर्ग, क ख ग घ ङ का उच्चारण होता है। तालू से च वर्ग - च छ ज झ ञ का उच्चारण होता है। इसके बाद वाग्यंत्र में मूर्धा का स्थान है, अतः ट वर्ग - ट ठ ड ढ ण का उच्चारण मूर्धा से होता है। इसके बाद दन्त आते हैं, अतः त वर्ग अर्थात त थ द ध न का उच्चारण दन्तों से जिह्वा का स्पर्श होने पर होता है। इसके पश्चात् ओष्ठ आते हैं, अतः प वर्ग अर्थात् प फ ब भ म का उच्चारण ओष्ठों के द्वारा होता है। कहना न होगा कि दुनिया की किसी भाषा में ऐसी तक्नीकी सुव्यवस्था नहीं है।

काव्य-मंजूषा

इंसाफ़

- सुरेश कुमार

बहुत कुछ सीखा है मैंने तुमसे,
और उससे कहीं ज़्यादा पाया भी है।
अब बस एक आख़िरी इंसाफ़ करना,
कि मुझे कभी भी माफ़ न करना।।

न कभी सोचना मेरे बारे में,
न ही कभी देखना पलट कर,
मैं अगर बढ़ाऊँ हाथ तो,
मुड़ जाना तुम झटक-कर।
तड़पाना, सताना इतना कि मेरा हर अरमान दम तोड़ दे,
जगाना मुझे इतना कि मेरी नींद भी मेरा साथ छोड़ दे।

तड़प ऐसी हो कि तड़प-तड़प कर सिसकियाँ निकलें,
दर्द हो इतना कि मौत के मानिंद दे पत्थर दिल पिघले।
न चैन हो न आराम हो, बचे कुछ तो बस बेचैनी ही बेचैनी।
कभी सूख न पाएँ आँखों के आँसू,
और दूर हो जाए मुझसे हर खुशी।
अपनी यादों के ज़रिए आना हर रोज़ मेरे पास,
और फिर से छोड़ देना, दिल के सब अरमान।
लहू की हर बूंद निचोड़ लेना।

हो सकता है मैं टूट जाऊँ, गिड़गिड़ाऊँ, माफ़ी भी माँगूं,
वास्ता भी दूं तुम्हें, तुम्हारी ही चाहतों का...
पर तुम मत पिघलना,
छोड़ देना मुझे जैसे मैंने तुम्हें छोड़ा था।
तोड़ देना मेरी हर उम्मीद,
जैसे मैंने तुम्हारे सपनों को तोड़ा था।।
अपनी ही लगाई आग में ये जिस्म जलकर ख़ाक हो जाए,
शायद तभी......., तभी मेरी भूल का पश्चाताप हो पाए।
पर उसके बाद भी एक आख़िरी इंसाफ़ करना....
कि मुझे कभी भी माफ़ न करना।।

- शाखा जी.एन.पी.एल., सनौली रोड, पानीपत

जीत लेकर क्या करूंगा?

- अमित अस्थाना

कट चुके हैं पंख मेरे, जीत लेकर क्या करूँगा,
जीत लेकर क्या करूँगा?

आज जग हँसने न देता, आज जग रोने न देता,
दो घड़ी भी चैन से जग, जागने-सोने न देता,
छीन ले अधिकार जो, रीत ऐसी लेकर क्या करूँगा,
जीत लेकर क्या करूँगा?

देख विवशता मेरी, गीत-नभ के सुर बिखरे,
किंतु फिर भी याद मुझको, मुस्करा कर सपने हमारे,
जो चुके स्वर कंठ में ही, गीत लेकर क्या करूँगा,
जीत लेकर क्या करूँगा?

अब न सुनता है कोई, जो दिल कह देता कहानी,
बदली बिना नीर की है, प्राण में दुग से रवानी,
आज एकाकी रहूँगा, गीत लेकर क्या करूँगा,
जीत लेकर क्या करूँगा?

- आंचलिक कार्यालय, बरेली

ज़िंदगी की कशमकश

- एस. एस. सिन्हा

तू उदास रहने से,
ज़िंदगी गुज़र नहीं होती,
जीवन की ऐसी राह है,
जिसकी डगर नहीं होती,
उम्र गुज़र जाती है,
दुश्मन को दोस्त बनाने में,
दोस्त कब बन जाए दुश्मन,
इसकी ख़बर नहीं होती।।

सुख और दुख एक ही
सिक्के के दो पहलू हैं,
इनकी ही बात करो,
समझ नहीं पाते हैं लोग,
मौत तो एक दिन,
सबको ही आनी है,
फिर भी मरने के एहसास से,
डर कर भी जाते हैं लोग।।

- सेवा निवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

काव्य-मंजूषा

तीन मुक्तक

- सितांशु कुमार

था उदास फीका है अमलतास, झर रही नीम मनहर सगोन,
मैंने खिड़की के पट खोले तो किया पवन ने अभिनंदन,
कजरारे काले मेघों ने कुछ किया इशारा बूँदों को।
ली पावस ऋतु ने अंगड़ाई खुल गए धरा के सभी बंधन।।

तब रुनझुन-रुनझुन स्वर सरिता बन गई जहाँ तक गया पवन,
बज उठे साज अन्तर्मन के, सोंधी महकी भाया चमन,
भीतर बाहर पानी-पानी, बन गई धारा पानी बन कर।
जब बूँदों ने मिल मेघ तजा, कर लिया धरा का आलिंगन।।

चलती है सिरसी चपल-चाल, चंचल-चंचल सिरसी सिहरन,
पड़ गई पाले जलबिंदुमाल होता तरुवर के मन कम्पन,
उन्नत उमंग संग दौड़ चले, फिर स्नेह-सलिल, निर्झर निर्झर।
वर्षा ने सांकल खड़काई, स्वागत करते वसन उपवन।।

- शाखा इन्दिरा नगर, लखनऊ

तब क्या होगा........?

- विशाखा शर्मा

माँ के घर से साजन के घर तक, रोती जाती है कन्याएँ।
पर रोती से बढ़ती जाती, बहू जलने की घटनाएँ।।

आज गर्भ में की जाती हैं, भ्रूणों की निर्मम हत्याएँ,
बिगड़ रहा अनुपात जन्म का, कम पैदा होती कन्याएँ।

कन्याएँ जब कम होंगी तो, रह जाएँगे बहुत कुँवारे,
जो दहेज न दे पाएँगे, दुखी रहेंगे सदा बेचारे।

अचरज नहीं, कभी अगर हम देखें, दुल्हन घर के घर आएगी,
दूल्हे को वर कर दहेज संग, सैर कराने ले जाएगी।
तब क्या होगा.....?

- शाखा सनौली रोड, पानीपत

जाने कहाँ ज़िंदगी खो गई......?

– प्रद्युम्न

जाने कहाँ ज़िंदगी खो गई।
तन्हाईयाँ जग गईं और नींद सो गई।
जाने कहाँ ज़िंदगी खो गई....

मैं चला था एक नई मंज़िल की आस में,
अपने ही सुख की होड़, एक पत्थर की तलाश में,
कदम तो रुके नहीं पर रास्ते थक गए,
दूर मुझसे हर मंज़िल हो गई,
जाने कहाँ ज़िंदगी खो गई....

सोचा मैंने सिर्फ़ अपने लिए, अपनी खुशी के लिए,
हज़ारों आँसू तुमने बहाए सिर्फ़ मेरी एक हँसी के लिए,
आज तुम तो नहीं पर तसव्वुर है तुम्हारा,
सूखा इन होंठों से हँसी भी हो गई,
जाने कहाँ ज़िंदगी खो गई....

तुमसे मिलना और मिलकर जीना चाहता हूँ,
थोड़ा हँसना और थोड़ा रोना चाहता हूँ,
मैं अकेला हूँ, तन्हा हूँ, अधीर भी हूँ,
अब तक चली गई मेरी, एक तुम जो गई,
जाने कहाँ ज़िंदगी खो गई....

- शाखा सनौली रोड, पानीपत

मानव-देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है, एवं मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है, क्योंकि इस मानव-देह तथा इस जन्म में ही हम इस सापेक्षिक जगत् से संपूर्णतया बाहर हो सकते हैं। निश्चय ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं और यह मुक्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है।

- स्वामी विवेकानन्द

सेवा-निवृत्तियाँ

पी.एस.बी. परिवार अपने सेवा-निवृत्त साथियों के स्वस्थ व सुखमय जीवन की कामना करता है।

महाप्रबंधक
श्री ध्रुव देव [illegible] : प्रधान कार्यालय, निरीक्षण विभाग

उप महाप्रबंधक
श्री कुलवीर सिंह : आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

सहायक महाप्रबंधक
श्रीमती मीनाक्षी आनंद : शाखा सिद्धार्थ एन्क्लेव, नई दिल्ली

मुख्य प्रबंधक

1. श्री [illegible] सिंह : पी.एस.बी. सेंटर फॉर बिज़नेस स्टडीज एण्ड ट्रेनिंग, चंडीगढ़
2. श्री जगदीप सिंह अरोड़ा : शाखा [illegible] नगरी
3. श्री गुरुचरण सिंह : शाखा सेक्टर-11, चण्डीगढ़
4. श्री जगजीत सिंह [illegible] : शाखा नाभा, पटियाला
5. श्री मोहिन्दर पाल सिंह : आंचलिक कार्यालय-II, नई दिल्ली
6. श्री जोगिंदर सिंह : आंचलिक कार्यालय, [illegible]

वरिष्ठ प्रबंधक

1. श्री [illegible] सिंह [illegible] : आंचलिक निरीक्षणालय, नई दिल्ली
2. श्री [illegible] सिंह : आंचलिक कार्यालय, फरीदाबाद
3. श्री [illegible] सिंह [illegible] : शाखा माता सुंदरी कॉलेज, नई दिल्ली
4. श्री [illegible] सिंह [illegible] : शाखा [illegible], पटियाला
5. श्री [illegible] : आंचलिक निरीक्षणालय, चण्डीगढ़
6. श्री [illegible] चौधरी : आंचलिक कार्यालय, [illegible]
7. श्री [illegible] सिंह : [illegible], जालंधर शाखा
8. श्री कुलजीत सिंह : [illegible], लुधियाना शाखा
9. श्री मोहिंदर पाल सिंह : शाखा सेक्टर-17 बी, चण्डीगढ़
10. श्री [illegible] सिंह [illegible] : आंचलिक निरीक्षणालय, चण्डीगढ़
11. श्री [illegible] : आंचलिक निरीक्षणालय, चण्डीगढ़
12. श्री कुलजीत सिंह : आंचलिक निरीक्षणालय, नई दिल्ली
13. श्री [illegible] सिंह [illegible] : शाखा एस.एस. [illegible] सिंह, [illegible], नई दिल्ली
14. श्री [illegible] सिंह : [illegible], पटियाला शाखा
15. श्री [illegible] सिंह : आंचलिक कार्यालय, जालंधर
16. श्री [illegible] सिंह [illegible] : आंचलिक कार्यालय, चण्डीगढ़
17. श्री [illegible] सिंह [illegible] : आंचलिक कार्यालय-II, नई दिल्ली
18. श्री [illegible] सिंह : आंचलिक कार्यालय, [illegible]
19. श्री [illegible] कुमार आनंद : प्रधान कार्यालय, आई.टी. विभाग

प्रबंधक

1. श्री [illegible] : [illegible], लुधियाना शाखा
2. श्री [illegible] चंद शर्मा : प्रधान कार्यालय, [illegible] विभाग
3. श्री [illegible] सिंह : [illegible], [illegible] शाखा
4. श्री विजय कुमार शर्मा : आई.टी.आई. जालंधर शाखा
5. श्री [illegible] सिंह : [illegible], जालंधर शाखा
6. श्री [illegible] कुमार : [illegible], [illegible] शाखा
7. श्री [illegible] : [illegible], दिल्ली शाखा
8. श्री [illegible] कुमार [illegible] : आंचलिक कार्यालय-I, नई दिल्ली
9. श्री [illegible] सिंह आनंद : [illegible], [illegible] शाखा
10. श्री [illegible] कुमार [illegible] : [illegible], [illegible] शाखा
11. श्री [illegible] सिंह : जी.आर.डी. [illegible], अमृतसर शाखा
12. श्री [illegible] : एस.एस.आई. लुधियाना शाखा
13. श्री [illegible] सिंह : सेक्टर-34, चण्डीगढ़ शाखा
14. श्री [illegible] सिंह [illegible] : आंचलिक निरीक्षणालय, चण्डीगढ़

[illegible]

15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]
22. [illegible]
23. [illegible]
24. [illegible]
25. [illegible]
26. [illegible]
27. [illegible]
28. [illegible]
29. [illegible]
30. [illegible]
51. [illegible]
52. [illegible]
53. [illegible]
54. [illegible]
55. [illegible]
56. [illegible]
57. [illegible]
58. [illegible]
59. [illegible]
60. [illegible]
61. [illegible]
62. [illegible]
63. [illegible]
64. [illegible]
65. [illegible]

अधिकारी

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]
22. [illegible]
23. [illegible]
24. [illegible]
25. [illegible]
26. [illegible]
27. [illegible]
28. [illegible]
29. [illegible]
30. [illegible]
31. [illegible]
32. [illegible]
33. [illegible]
34. [illegible]
35. [illegible]
36. [illegible]
37. [illegible]
38. [illegible]
39. [illegible]
40. [illegible]
41. [illegible]
42. [illegible]
43. [illegible]
44. [illegible]
45. [illegible]
46. [illegible]
47. [illegible]
48. [illegible]
49. [illegible]
50. [illegible]

नन्हें चित्रकार

श्री इन्दजीत सिंह
प्र.क्ष. सामान्य प्रशासन विभाग, नई दिल्ली

श्री हर्ष
सुपुत्र श्री वीरेन्द्र रामटेके
आंचलिक कार्यालय,
चंडीगढ़

सुश्री मंजना सागर, सुपुत्री बेबी कुमारी
प्र.क्ष. लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग, नई दिल्ली

सुश्री गुरलीन कौर,
सुपुत्री श्री एस. एस. आनंद
प्र.क्ष. आई.टी. विभाग,
नई दिल्ली

कुमारी रमनदीप कौर, सुपुत्री श्री हरजीत सिंह
प्र.क्ष. सामान्य प्रशासन विभाग, नई दिल्ली

मास्टर विशेष कटारिया,
सुपुत्र श्री सुरेश कुमार कटारिया
प्र.क्ष. सामान्य प्रशासन विभाग,
नई दिल्ली

साहित्य अकादमी अवार्ड से सम्मानित
श्री दर्शन सिंह बुट्टर

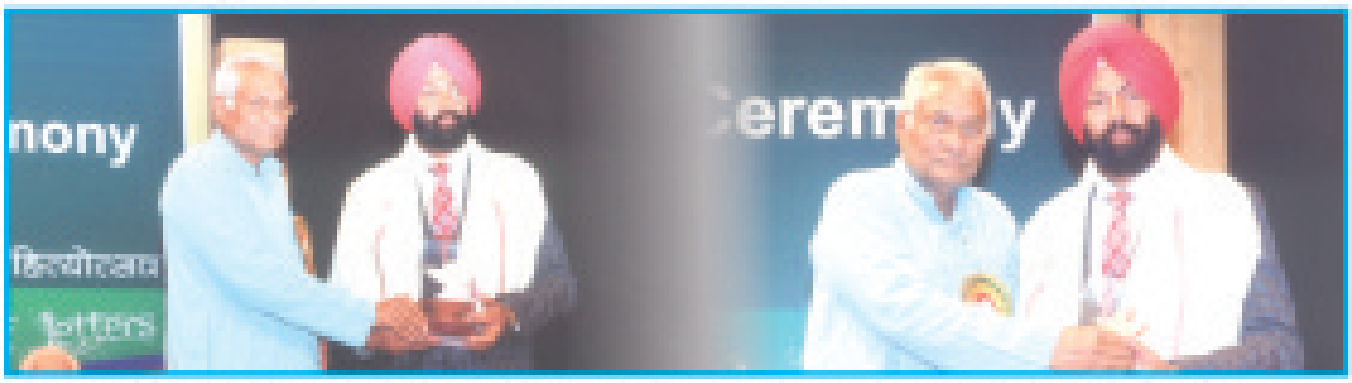

पंजाब एण्ड सिंध बैंक के सोहड़ा शाखा के अधिकारी श्री दर्शन सिंह बुट्टर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

आंचलिक कार्यालय, पटियाला की सोहड़ा शाखा में कार्यरत श्री दर्शन सिंह बुट्टर अधिकारी को उनकी पंजाबी पुस्तक 'महा कंजरी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस विशिष्ट उपलब्धि पर आयोजित कार्यक्रम में आंचलिक प्रबंधक श्री हरदीप सिंह बेदी श्री दर्शन सिंह बुट्टर को बैंक की ओर से ट्रॉफी भेंट करते हुए। पी.एस.बी. परिवार की ओर से श्री बुट्टर को हार्दिक बधाई।

प्रकाशित पुस्तकें :

औड़ दे बद्दल (१९८४)
बैसाखी हवा (१९९४)
उजाड़, आग ते रेत (१९९८)
खारंगा (२००३)
दर्द मजीठी (२००६)
महा कंजरी (२००९)

पुरस्कार

- भाषा विभाग पटियाला, पंजाब द्वारा शिरोमणि पंजाबी पुरस्कार, 2006
- प्रोफेसर मोहन सिंह फाउण्डेशन द्वारा प्रोफेसर मोहन सिंह कविता पुरस्कार, 2012
- अजीत कमल के परिवार, लुधियाना द्वारा पहला अजीत कमल मेमोरियल पुरस्कार, 2011
- जनवादी कविता मंच, पंजाब द्वारा जनवादी कविता पुरस्कार, 1999
- पंजाब स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड लेखक सभा द्वारा बलराज साहनी पुरस्कार, 2008
- दैनिक नवां ज़माना, जालंधर द्वारा बीबी मंजरा और मेमोरियल अवार्ड, 2001
- भाषा विभाग पंजाब, पटियाला द्वारा प्रसिद्ध कविता संग्रह 'उजाड़, आग ते रेत' को ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर पुरस्कार, 1997
- भाषा विभाग पंजाब, पटियाला द्वारा प्रसिद्ध कविता संग्रह 'खारंगा' को ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर पुरस्कार, 2002
- पंजाबी साहित्य मंच, मंचाला (मुकेरिया) द्वारा 1984 का कविता पुरस्कार
- पंजाब एण्ड सिंध बैंक, दिल्ली द्वारा कविता-संग्रह 'औड़ दे बद्दल' को 1985 का रेटिंग बैंक अवार्ड
- इसके अलावा अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, भारत तथा पंजाब द्वारा कई विशेष पुरस्कार

साहित्य अकादमी अवार्ड से सम्मानित पुस्तक